23-सूरत-मूमिनून

इस मक्की सूरत में '6' रूकू और '118' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ﴿۱﴾ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۙ﴿۲﴾ وَ الَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۙ﴿۳﴾
وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۙ﴿۴﴾ وَ الَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۙ﴿۵﴾ اِلَّا عَلٰۤى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۚ﴿۶﴾ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۚ﴿۷﴾ وَ الَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَ
عَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۙ﴿۸﴾ وَ الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۘ﴿۹﴾ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۙ﴿۱۰﴾ الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ
الْفِرْدَوْسَ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۱۱﴾

आयत नं० 01 से 11

बेशक उन मुसलमानों ने (आख़रत में) **कामयाबी पाई**(1) **जो** (सही अक़ीदों के साथ इन बातों की पाबन्दी करते हैं यानी वो) **अपनी नमाज़ में दिल से झुकने वाले हैं**(2) **और जो बेकार** (यानी फ़ालतू) **बातों से बचने वाले हैं**(3) **और जो अपने** (जी) **को** (बुरी बातों से) **पाक रखने वाले हैं**(4) **और जो अपनी शर्मगाहों की** (और सब से) **हिफ़ाज़त रखने वाले हैं**(5) **सिवाए अपनी बीवियों से या अपनी** (शरई) **बान्दियों से क्योंकि उन पर** (इसमें) **कोई इल्ज़ाम नहीं**(6) **हां जो इसके सिवा** (और जगह इस ज़रूरत को पूरी करना) **चाहें ऐसे लोग** (शरीअत की) **हद से निकलने वाले** (बदकार) **हैं**(7) **और जो अपनी** (सुपुर्दगी में ली हुई) **अमानतों और अपने एहद** (और वादों) **का ध्यान रखने वाले हैं**(8) **और जो अपनी** (फ़र्ज़) **नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं**(9) **ऐसे ही लोग वारिस होने वाले हैं**(10) **जो फ़िरदौस** (जन्नत) **के वारिस होंगे और** (वो) **उसमें सदा-सदा रहेंगे**(11)

नोटः- यहां मालूम हो गया कि असल कामयाबी और कामयाबी की जगह जन्नत है।

وَ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ۚ﴿۱۲﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِیْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۪﴿۱۳﴾ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ
عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۗ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ
اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ؕ﴿۱۴﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ؕ﴿۱۵﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ﴿۱۶﴾ وَ لَقَدْ خَلَقْنَا
فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ ۖۗ وَ مَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ﴿۱۷﴾ وَ اَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِی الْاَرْضِ ۖۗ وَ اِنَّا
عَلٰى ذَهَابٍۢ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ۚ﴿۱۸﴾ فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ اَعْنَابٍ ۘ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّ مِنْهَا
تَاْكُلُوْنَ ۙ﴿۱۹﴾ وَ شَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَ صِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ﴿۲۰﴾ وَ اِنَّ لَكُمْ فِی الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ
نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِیْ بُطُوْنِهَا وَ لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّ مِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۙ﴿۲۱﴾ وَ عَلَيْهَا وَ عَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿۲۲﴾

आयत नं० 12 से 22

और (अब इन्सान के पैदा करने का बयान है कि) **हम ने इन्सान को मिट्टी के सत्त** (यानी खुराक) **से बनाया** (यानी पहले मिट्टी से खेती पैदा होती है फिर उससे खुराक ली जाती है)(12) **फिर हम ने उस को मनी की बून्द से बनाया जो कि** (एक ख़ास वक़्त तक) **एक हिफ़ाज़त की जगह** (यानी बच्चे दानी) **में रहा** (और वो खुराक से बना था)(13) **फिर हम ने उस बून्द को जमा हुआ ख़ून बना दिया फिर हम ने उस जमे ख़ून को** (गोश्त की) **बोटी बना दिया फिर हम ने उस बोटी** (के कुछ हिस्सों) **को हड्डियां बना दिया फिर हम ने उन हड्डियों पर गोश्त चढ़ा दिया** (जिससे वो हड्डियां ढक गईं) **फिर** (इन सब बदलाव के बाद) **हम ने** (उसमें रूह डाल कर) **उस को एक दूसरी ही** (तरह की) **मख़लूक़ बना दिया** (यानी एक ज़िन्दा इन्सान बन गया), **सो कैसी शान है अल्लाह की जो सारे कारीगरों से बढ़ कर** (कारीगर है क्योंकि दूसरे कारीगर तो अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ों में जोड़ तोड़ करके ही बनाते हैं ज़िन्दगी पैदा करना यह ख़ास अल्लाह ही का काम) **है**(14) (आगे इन्सान के आख़री अन्जाम का बयान है कि) **फिर तुम इस** (अजीब क़िस्से) **के बाद ज़रूर ही मरने वाले हो**(15) **फिर तुम क़ियामत के दिन दोबारा ज़िन्दा किये जाओगे।**(16) **और** (जिस तरह हम ने तुम को शुरू में पैदा किया इसी तरह तुम्हारे जीने का सामान भी किया कि) **हम ने तुम्हारे ऊपर सात** (आसमान जिन में फ़रिशतों के आने जाने के लिए) **रास्ते** (हैं) **बनाए** (कि इसमें तुम्हारे बहुत से फ़ाइदे जुड़े हैं), **और हम** (अपनी पैदा की हुई) **मख़लूक़** (की भलाइयों) **से अन्जान नहीं थे** (बल्कि सब की ज़रूरतों का ध्यान रक्खा गया)(17) **और हम ने** (इन्सान की ज़रूरत के

लिए) **आसमान से** (ठीक) **अन्दाज़ के साथ पानी बरसाया फिर उस को** (लम्बे वक़्त तक) **ज़मीन में ठहराया** (जैसा कि कुछ पानी तो ज़मीन के ऊपर रहता है और कुछ अन्दर उतर जाता है जो ज़रूरत के हिसाब से निकलता रहता है), **और हम** (जिस तरह उस के बरसाने की क़ुदरत रखते हैं इसी तरह) **उस** (पानी) **के ग़ाइब कर देने की** (भी) **क़ुदरत रखते हैं** (कि इतनी गहराई में चला जाए कि किसी तरह न निकाल सको मगर हम ने बाक़ी रक्खा)(18) **फिर हम ने उस** (पानी) **से तुम्हारे लिए बाग़ पैदा किये खजूरों के और अंगूरों के, तुम्हारे वास्ते उन में बहुत से** (ताज़े) **फल** (भी) **हैं और उनमें से** (कुछ को बचाकर सुखा कर रख लेते हो फिर बाद में) **खाते** (भी) **हो(19) और** (उसी पानी से) **एक** (ज़ैतून का) **पेड़ भी** (हम ने पैदा किया) **जो कि सीना** (नाम के) **पहाड़ में** (बहुत) **पैदा होता है जो उगता है तेल लिये हुए और खाने वालों के लिए सालन लिये हुए** (यानी उस का तेल जलाने और खाने दोनों काम आता है)(20) **और तुम्हारे लिए जानवरों में** (भी) **नसीहत का सामान है, कि हम तुम को उन के पेट में की चीज़** (यानी दूध) **पीने को देते हैं और तुम्हारे लिए उनमें और भी बहुत से फ़ाइदे हैं** (कि उनके बाल और ऊन काम आती है) **और उनमें से कुछ को खाते भी हो(21) और उन** (में जो सवारी के क़ाबिल हैं उन) **पर और कशती पर** (और दूसरी सवारियों पर) **सवार** (भी) **होते हो(22)**

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ الْمَلَؤُا
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ؕ وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ۚۖ
مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْۤ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ۚ﴿٢٤﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ
بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٢٦﴾ فَاَوْحَيْنَاۤ اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَ وَحْيِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَ فَارَ التَّنُّوْرُ ۙ فَاسْلُكْ فِيْهَا
مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَ اَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۚ وَ لَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ
مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَ مَنْ مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ نَجّٰىنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٨﴾
وَ قُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّ اَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّ اِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِيْنَ ﴿٣٠﴾

आयत नं० 23 से 30

और (आगे बयान है लोगों के दीनी सुधार के लिए किये गये इन्तिज़ामों का कि) **हम ने नूह** (अलैहिस्सलाम) **को उन की क़ौम की तरफ़ पैग़म्बर करके भेजा सो उन्होंने** (अपनी क़ौम से) **कहा**

कि ऐ मेरी क़ौम अल्लाह ही की इबादत किया करो उसके सिवा कोई तुम्हारे लिए माबूद बनाने के लाइक़ नहीं, (और जब यह एक बात साबित है तो) **फिर क्या तुम** (दूसरों के माबूद बनाने से) **डरते नहीं हो(23) बस** (नूह अलैहिस्सलाम की यह बात सुनकर) **उन की क़ौम में जो काफ़िर सरदार थे** (लोगों से) **कहने लगे यह आदमी सिवाए इसके कि तुम्हारी तरह का एक** (आम) **आदमी है और कुछ नहीं** (यानी पैग़म्बर नहीं) **है** (और ख़ुद को पैग़म्बर कहने से) **उस का** (असल) **मतलब यह है कि तुम से बड़ा बन कर रहे** (यानी यह अपनी इज़्ज़त व बड़ाई चाहता है), **और अगर अल्लाह** (पैग़म्बर भेजना) **चाहता तो** (इस काम के लिए) **फ़रिशतों को भेजता** (बस उन का यह कहना ग़लत और तौहीद की तरफ़ बुलाना भी ग़लत क्योंकि) **हम ने यह बात** (कि और किसी को माबूद मत बनाओ) **अपने बड़ों में** (कभी) **नहीं सुनी(24) बस यह एक दीवाना आदमी है** (इसलिए सारी दुनिया से अलग बातें करता है कि मैं पैग़म्बर हूं और ख़ुदा एक है) **सो एक ख़ास वक़्त** (यानी उसके मरने के वक़्त) **तक उस** (की हालत) **का और इन्तिज़ार कर लो** (आख़िर एक वक़्त पर पहुंच कर ख़त्म हो जाएगा और सारा झगड़ा मिट जाएगा)(25) **नूह** (अलैहिस्सलाम) **ने** (उनके ईमान लाने से नाउम्मीद होकर अल्लाह तआ़ला से) **दुआ की कि या रब मेरे** (उन से) **मेरा बदला ले इस वजह से कि उन्होंने मुझ को झुटलाया है(26) बस हम ने** (उन की दुआ़ कुबूल की और) **उन के पास हुक्म भेजा कि तुम कशती तैयार कर लो हमारी देख रेख में और हमारे हुक्म से** (कि अब तूफ़ान आएगा और तुम और मुसलमान उस पर सवार होकर बच जाओगे) **फिर जिस वक़्त हमारा हुक्म** (अज़ाब का नज़दीक) **आपहुंचे और** (निशानी उस की यह है कि) **ज़मीन से पानी उबलना शुरू हो जाए तो** (उस वक़्त) **हर क़िस्म** (के जानवरों) **में से** (जो कि इन्सान के काम के हैं और पानी में ज़िन्दा नहीं रह सकते जैसे गाय बैल भेड़ बकरी ऊंट घोड़ा और दूसरे) **एक-एक जोड़ा** (यानी नर मादा) **इस** (कशती) **में सवार कर लो और अपने घर वालों को भी** (सवार कर लो) **सिवाए उसके जिस पर उनमें से** (डूबने का) **हुक्म हो चुका है** (यानी आप के घर वालों में जो काफ़िर हो उस को मत सवार करो), **और** (यह सुन लो कि अज़ाब आने के वक़्त) **मुझ से काफ़िरों** (के बचाने) **के बारे में कुछ बात मत करना** (क्योंकि) **वो सब डुबोए जाएंगे(27) फिर जिस वक़्त तुम और तुम्हारे साथी** (मुसलमान) **कशती में बैठ चुको तो यह कहना कि शुक्र है अल्लाह का जिसने हम को काफ़िर लोगों से** (यानी उनके कामों और उनके वबाल से) **बचाया(28) और** (जब तूफ़ान गुज़रने के बाद कशती से ज़मीन पर आने लगो तो) **यह कहना कि या रब मेरे मुझ को** (ज़मीन पर) **बरकत का उतारना उतार दीजिए** (कि चैन आराम के साथ रहना हो) **और**

आप सब उतारने वालों से अच्छे (हैं क्योंकि और लोग अपने महमान की सब ज़रूरतें पूरी करने की कुदरत नहीं रखते आप इन सब चीज़ों पर कुदरत रखते) **हैं**(29) **इस** (क़िस्से) **में** (समझदारों के लिए हमारी कुदरत की) **बहुत सी शिानियां हैं और हम** (ये निशानियां दिखा कर अपने बन्दों को) **आज़माते हैं** (कि देखें कौन इन से नफ़ा उठाता है कौन नहीं उठाता, और निशानियां ये हैं- पैग़म्बर भेजना, ईमानदारों को बचा लेना काफ़िरों को हलाक कर देना, अचानक तूफ़ान पैदा कर देना कशती को सही सलामत रखना और बहुत सी)(30)

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِیْنَ ﴿۳۱﴾ فَاَرْسَلْنَا فِیْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ
غَیْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۳۲﴾ وَ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَ اَتْرَفْنٰهُمْ فِی الْحَیٰوةِ
الدُّنْیَا ۙ مَا هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ یَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَ یَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَ لَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا
مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿۳۴﴾ اَیَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَ كُنْتُمْ تُرَابًا وَّ عِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ﴿۳۵﴾
هَیْهَاتَ هَیْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿۳۶﴾ اِنْ هِیَ اِلَّا حَیَاتُنَا الدُّنْیَا نَمُوْتُ وَ نَحْیَا وَ مَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِیْنَ ﴿۳۷﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا
رَجُلُ اِۨفْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا وَّ مَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِیْنَ ﴿۳۸﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِیْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿۳۹﴾ قَالَ عَمَّا قَلِیْلٍ
لَّیُصْبِحُنَّ نٰدِمِیْنَ ﴿۴۰﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّیْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۴۱﴾

आयत नं० 31 से 41

फिर (नूह की क़ौम के बाद) **हम ने दूसरी क़ौम पैदा की**(31) **फिर हम ने उन में एक पैग़म्बर को भेजा जो उन्हीं में के थे** (उन पैग़म्बर ने कहा कि) **तुम लोग अल्लाह ही की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा और कोई** (सच्चा) **माबूद नहीं, क्या तुम** (शिर्क से) **डरते नहीं हो**(32) **और उन की क़ौम के वो सरदार जो काफ़िर थे और आख़रत के मिलने को झुटलाते थे और हम ने उन को दुनिया की ज़िन्दगी में ऐश भी दिया था** (वो) **कहने लगे कि बस ये तो तुम्हारी तरह एक** (आम) **आदमी हैं** (जैसा कि) **ये वो ही खाते हैं जो तुम खाते हो और वो ही पीते हैं जो तुम पीते हो**(33) **और** (जब ये तुम्हारे ही जैसे इन्सान हैं तो) **अगर तुम अपने जैसे एक** (आम) **आदमी के कहने पर चलने लगो तो बेशक तुम** (समझ के) **घाटे में हो** (यानी बड़ी बेवकूफ़ी है)(34) **क्या यह आदमी तुम से यह कहता है कि जब तुम मर जाओगे और** (मरकर)

मिट्टी और हड्डियां हो जाओगे तो (फिर दोबारा ज़िन्दा करके) **ज़मीन से निकाले जाओगे(35) बहुत ही दूर है** (समझ से) **बहुत ही दूर है जो बात तुम से कही जाती है(36) बस ज़िन्दगी तो ये ही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है कि हम में कोई मरता है और कोई पैदा होता है और हम दोबारा ज़िन्दा न किये जाएंगे(37) बस यह एक ऐसा आदमी है जो अल्लाह पर झूट बान्धता है** (कि उसने मुझ को पैग़म्बर बनाकर भेजा है और कोई दूसरा माबूद नहीं और क़ियामत आएगी) **और हम तो कभी इस को सच्चा न समझेंगे(38) पैग़म्बर ने दुआ की कि या रब मेरे मेरा बदला ले इस वजह से कि उन्होंने मुझ को झुटलाया(39) अल्लाह तआ़ला ने कहा कि ये लोग जल्दी ही पछताएंगे(40) बस उन को एक सख़्त आवाज़** (के अज़ाब) **ने सच्चे वादे के हिसाब से आ पकड़ा** (जिससे वो सब हलाक हो गये) **फिर** (हलाक करने के बाद) **हम ने उन को कूड़ा करकट** (की तरह रोंद) **कर** (रख) **दिया, सो फिटकार है** (अल्लाह की ऐसे) **ज़ालिम** (व काफ़िर) **लोगों पर(41)**

नोटः- ऊपर जिस क़ौम का ज़िक्र आया है वो क़ौमे आद है या क़ौमे समूद है।

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ۝۴۲ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَ مَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ۝۴۳ ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا
تَتْرَا ؕ كُلَّمَا جَآءَ اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَّ جَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا
يُؤْمِنُوْنَ ۝۴۴ ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَ اَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِنَا وَ سُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝۴۵ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ مَلَا۟ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَ
كَانُوْا قَوْمًا عَالِيْنَ ۝۴۶ فَقَالُوْۤا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَ قَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ ۝۴۷ فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ
الْمُهْلَكِيْنَ ۝۴۸ وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝۴۹ وَ جَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَ اُمَّهٗۤ اٰيَةً وَّ اٰوَيْنٰهُمَاۤ اِلٰى
رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّ مَعِيْنٍ ۝۵۰

आयत नं० 42 से 50

फिर उन (क़ौमों) **के** (हलाक होने के) **बाद हम ने और उम्मतों को पैदा किया** (पैग़म्बरों को झुटलाने की वजह से वो भी हलाक हुए)**(42) कोई उम्मत** (उन उम्मतों में से) **अपने** (उस) **तय वक़्त से** (जो अल्लाह के इल्म में तय था, हलाक होने में) **न आगे बढ़ सकती थी न पीछे हट सकती** (थी बल्कि ऐन वक़्त पर हलाक की गई) **थी(43)** (मतलब यह कि वो उम्मतें पहले पैदा की गईं) **फिर** (उन के पास) **हम ने** (हिदायत के लिए) **लगातार अपने पैग़म्बरों को भेजा,** (मगर उन की हालत

यह हुई कि) **जब कभी किसी उम्मत के पास उस उम्मत का** (ख़ास) **पैग़म्बर** (अल्लाह के हुक्म लेकर) **आया उन्होंने उस को झुटलाया तो हम ने** (भी हलाक करने में) **एक के बाद एक का तार बान्ध दिया और हम ने उन को** (क़िस्से) **कहानियां बना दिया** (यानी वो ऐसे मिटे कि सिवाए कहानियों के उन का कुछ नाम निशान न रहा)**, सो अल्लाह की फिटकार उन लोगों पर जो** (पैग़म्बरों के समझाने पर भी) **ईमान न लाते थे(44) फिर हम ने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **और उनके भाई हारून** (अलैहिस्सलाम) **को** (पैग़म्बर बनाकर) **अपने हुक्म और** (पैग़म्बरी की) **खुली दलील** (यानी मोजिज़ा) **देकर भेजा(45) फ़िरऔन और उसके दरबारियों के पास तो उन लोगों ने** (उन की तस्दीक़ व ताबेदारी से) **घमन्ड किया और वो लोग थे** (पहले) **ही** (से) **घमन्डी(46) सो वो** (आपस में) **कहने लगे कि क्या हम अपने जैसे दो आदमियों पर ईमान ले आएं** (और उन के कहने में चलें) **जब कि उन की क़ौम के लोग** (तो ख़ुद) **हमारे ग़ुलाम हैं** (यानी हमारी तो ख़ुद उन की क़ौम पर हुकूमत है फिर उन दोनों की सरदारी को हम कैसे मान लें उन्होंने दीन की सरदारी को दुनिया की सरदारी की तरह समझा)(47) **बस वो लोग उन दोनों को झुटलाते ही रहे सो** (इस झुटलाने की वजह से) **हलाक किये गये(48) और** (उन के हलाक होने के बाद) **हम ने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को किताब** (तौरेत) **दी ताकि** (उससे) **वो लोग** (यानी मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम बनी इस्राईल) **सीधी रह पाएं(49) और हमने** (अपनी क़ुदरत और तौहीद के सबूत के लिए और ऐसे ही बनी इस्राईल की हिदायत के लिए) **मरयम के बेटे** (ईसा अलैहिस्सलाम) **को और उन की मां** (हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम) **को बड़ी निशानी** (अपनी क़ुदरत की और उन की सच्चाई की) **बनाया** (कि बेबाप पैदा होना दोनों की बड़ी निशानी है) **और** (चूंकि उन को नबी बनाना था और एक ज़ालिम बादशाह बचपन में ही उन का दुशमन हो गया इसलिए) **हम ने** (उससे बचाकर) **उन दोनों को एक ऐसी ऊंची ज़मीन पर ले जाकर पनाह दी जो** (ग़ल्ले और फलों की पैदावार की वजह से) **रहने के क़ाबिल थी और** (बहती नहर के) **साफ़ पानी** (की वजह से हरी भरी थी यहां तक कि जवान हुए और पैग़म्बरी मिली मगर कुछ लोग ईमान नहीं लाए)(50)

يٰۤاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوۡا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعۡمَلُوۡا صَالِحًا ؕ اِنِّىۡ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ عَلِيۡمٌ ؕ ﴿٥١﴾ وَاِنَّ هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمۡ اُمَّةً وَّاحِدَةً
وَّاَنَا رَبُّكُمۡ فَاتَّقُوۡنِ ﴿٥٢﴾ فَتَقَطَّعُوۡۤا اَمۡرَهُمۡ بَيۡنَهُمۡ زُبُرًا ؕ كُلُّ حِزۡبٍۢ بِمَا لَدَيۡهِمۡ فَرِحُوۡنَ ﴿٥٣﴾ فَذَرۡهُمۡ فِىۡ غَمۡرَتِهِمۡ
حَتّٰى حِيۡنٍ ﴿٥٤﴾ اَيَحۡسَبُوۡنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمۡ بِهٖ مِنۡ مَّالٍ وَّبَنِيۡنَ ۙ ﴿٥٥﴾ نُسَارِعُ لَهُمۡ فِى الۡخَيۡرٰتِ ؕ بَلْ لَّا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿٥٦﴾

आयत नं० 51 से 56

(हम ने तुम्हारी तरह दूसरे पैग़म्बरों और उन की उम्मतों को भी हुक्म दिया कि) **ऐ पैग़म्बरों तुम** (और तुम्हारी उम्मतें) **पाकीज़ा** (यानी हलाल) **चीज़ें खाओ** (कि अल्लाह की नेमतें हैं) **और** (खाकर शुक्र अदा करो यानी इबादत और) **नेक काम करो,** (और) **मैं तुम सब के किये हुए कामों को अच्छी तरह जानता हूं** (तो इबादत और नेक कामों पर उन का बदला दूंगा)(51) **और** (हम ने उन से यह भी कहा कि जो तरीक़ा तुम्हें अभी बताया गया है) **यह है तुम्हारा तरीक़ा** (यानी दीन जिस पर तुम को चलना और रहना वाजिब है) **कि वो एक ही तरीक़ा है** (सब नबियों और उनकी उम्मतों का किसी शरीअत में यह तरीक़ा नहीं बदला) **और** (मतलब उस का यह है कि) **मैं तुम्हारा रब हूं सो तुम मुझ से डरते रहो** (यानी मेरे हुक्मों की मुख़ालफ़त न करो)(52) **सो** (चाहिए तो यह था कि सब एक ही तरीक़े पर रहते मगर ऐसा न किया बल्कि) **उन लोगों ने अपने दीन में फूट डाल कर अलग-अलग फ़िरक़े बना लिये, हर फ़िरक़े के पास जो दीन** (यानी अपना बनाया हुआ तरीक़ा) **है वो उसी पर मगन और ख़ुश** (है उसके ग़लत होने के बावजूद उसी को हक़ समझता) **है(53) तो आप उन को उन की जहालत में एक ख़ास वक़्त तक रहने दीजिए** (यानी उन की जहालत पर आप ग़म न कीजिए जब उन की मौत का वक़्त आजाएगा असलीयत खुल जाएगी)(54) **क्या** (एक दम अज़ाब न आने पर) **ये लोग यह सोच रहे हैं कि हम उन को जो कुछ माल व औलाद देते हैं(55) तो हम उन को जल्दी-जल्दी फ़ाइदे पहुंचा रहे हैं,** (यह बात बिल्कुल नहीं) **बल्कि ये लोग** (इस ढील देने की वजह) **नहीं जानते** (यानी यह ढील तो आज़माने के लिए है क्योंकि हमारी ढील और मोहलत देने से ये और घमन्डी होकर सरकशी और गुनाह ज़्यादा करेंगे और अज़ाब ज़्यादा होगा)(56)

नोटः- आलिमों ने बताया कि हलाल खाने का नेक कामों में बड़ा दख़ल है जब खाना हलाल होता है तो नेक कामों की तौफ़ीक़ ख़ुद ही होने लगती है और खाना हलाल न हो तो नेक काम का इरादा करने के बावजूद भी नहीं कर पाते बल्कि ऐसी सूरत में कि खाना और लिबास हलाल न हो तो दुआ और इबादत भी क़ुबूल नहीं होती।

إِنَّ الَّذِينَ هُم مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِينَ هُم بِآيَاتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٨﴾ وَالَّذِينَ هُم بِرَبِّهِمْ لَا
يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾ وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوا وَّقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ﴿٦٠﴾ أُولَٰئِكَ يُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ
وَهُمْ لَهَا سَابِقُونَ ﴿٦١﴾ وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتَابٌ يَنطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٢﴾

आयत नं० 57 से 62

इसमें कोई शक नहीं कि जो लोग अपने रब के रौब से डरते रहते हैं(57) और जो लोग अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं(58) और जो लोग अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं मानते(59) और जो लोग (अल्लाह के रास्ते में) **देते हैं जो कुछ देते हैं और** (अल्लाह की राह में देने और ख़र्च करने के बावजूद) **उन के दिल इस बात से डरते हैं कि वो अपने रब के पास जाने वाले हैं** (देखिये वहां जाकर इन सदक़े ख़ैरात का क्या फल मिले कहीं ऐसा न हो कि हमारी किसी कमी की वजह से क़ुबूल न हों)**(60) ये लोग भलाइयां पाने में जल्दी कर रहे हैं और वो उन** (भलाइयों) **की तरफ़ दौड़ रहे** (हैं जैसे आम लोग दुनिया के नफ़ों के पीछे दौड़ते और एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते) **हैं(61) और** (ये काम कुछ भारी नहीं जिन का करना मुश्किल हो क्योंकि) **हम किसी को उस की हिम्मत से ज़्यादा काम करने को नहीं कहते** (इसलिए ये सब काम आसान हैं और इसके साथ उन का अच्छा अन्जाम और फल यक़ीनी है क्योंकि) **हमारे पास एक दफ़तर** (आमाल नामे का) **है जो ठीक-ठीक** (सब का हाल) **बता देगा और लोगों पर ज़रा** (भी) **ज़ुल्म न होगा(62)**

नोटः- हज़रत हसन बसरी रह० कहते हैं कि हमने ऐसे लोग देखे हैं जो नेक काम करके इतना डरते थे कि तुम बुरे काम करके भी इतना नहीं डरते।

بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِيْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَ لَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ۝٦٣ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ
بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْـَٔرُوْنَ ۝٦٤ لَا تَجْـَٔرُوا الْيَوْمَ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ۝٦٥ قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ
فَكُنْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ۝٦٦ مُسْتَكْبِرِيْنَ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ۝٦٧ اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ
يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٦٨ اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ۝٦٩ اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ بَلْ جَآءَهُمْ
بِالْحَقِّ وَ اَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ۝٧٠ وَ لَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَ الْاَرْضُ وَ مَنْ فِيْهِنَّ
بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝٧١ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّ هُوَ خَيْرُ
الرّٰزِقِيْنَ ۝٧٢ وَ اِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٧٣ وَ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ
لَنٰكِبُوْنَ ۝٧٤ وَ لَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَ كَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝٧٥ وَ لَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ
فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ وَ مَا يَتَضَرَّعُوْنَ ۝٧٦ حَتّٰۤى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ۝٧٧

आयत नं० 63 से 77

(यह तो ऊपर मोमिनों की हालत सुनी मगर काफ़िर ऐसे नहीं हैं) **बल्कि** (इसके उलट) **इन काफ़िरों के दिल इस दीन की तरफ़ से जहालत** (और शक) **में** (डूबे हुए) **हैं और इस** (जहालत व इनकार) **के सिवा उन लोगों के और भी** (बुरे बुरे गन्दे) **काम हैं जिन को** (ये लगातार) **करते रहते हैं(63)** (और ये लोग शिर्क और बुरे कामों के बराबर आदी रहेंगे) **यहां तक कि जब हम उन के ख़ुशहाल** (और दौलतमन्द) **लोगों को** (मौत के बाद) **अज़ाब में पकड़ लेंगे** (और ग़रीब तो किस गिनती में हैं और वो तो अज़ाब से क्या बचाव कर सकते हैं बस जब उन पर अज़ाब आएगा) **तो एक दम चिल्ला उठेंगे(64)** (और सारा इनकार व घमन्ड निकल जाएगा कि जिस के अब आदी हैं उस वक़्त उन से कहा जाएगा कि) **अब मत चिल्लाओ** (कि कोई फ़ाइदा नहीं क्योंकि) **हमारी तरफ़ से तुम्हारी ज़रा भी मदद न** (होगी क्योंकि वो तो इन्साफ़ की जगह) **होगी(65)** (जहां गिड़गिड़ाना नफ़ा दे सकता था यानी दुनिया वहां तो तुम्हारा यह हाल था कि) **मेरी आयतें तुम को पढ़-पढ़ कर** (पैग़म्बर की ज़बान से) **सुनाई जाया करती थीं तो तुम उल्टे पांव भागते थे(66) घमन्ड करते हुए क़ुरआन का खेल बनाते हुए** (इस क़ुरआन की शान में) **बेहूदा बकते हुए** (कोई उस को जादू कहता कोई शेर शाइरी कहता बस जैसा दुनिया में किया वैसा भुगतो)**(67) क्या** (वजह है इस की जो ये लोग क़ुरआन और क़ुरआन लाने वाले को झुटला रहे हैं क्या) **इन लोगों ने इस** (अल्लाह के) **कलाम में सोचा नहीं** (जिससे इस की करामत का पता चल जाता और ये ईमान ले आते) **या** (झुटलाने की यह वजह है कि) **उनके पास कोई ऐसी चीज़ आई है जो उन के पहले बड़ों के पास नहीं आई थी** (यानी पैग़म्बरों के वास्ते से उम्मतों को सदा ये ही हुक्म दिये जाते रहे हैं)**(68) या** (झुटलाने की वजह यह है कि) **ये लोग अपने पैग़म्बर** (की सच्चाई व अमानत दारी) **को जानते ही न थे इस वजह से उनका इनकार कर रहे हैं** (लेकिन आप की सच्चाई और अमानतदारी को तो पहले से ही सब लोग मानते थे)**(69) या** (यह वजह है कि) **ये लोग** (नऊ़ज़ुबिल्लाह) **आप के बारे में कहते हैं कि ये दीवाने** (हैं सो आप की समझदारी और अक़्लमन्दी को तो सब जानते और मानते) **हैं, बल्कि** (असली वजह यह है कि) **ये पैग़म्बर उन के पास हक़ बात लेकर आए हैं और इन में बहुत लोग हक़ बात से नफ़रत रखते** (हैं बस यह असल वजह है कि दीन में अपनी मर्ज़ी चलाना चाहते) **हैं(70) और** (मान लो जैसा वो चाहते हैं) **अगर दीने हक़ उन की मर्ज़ी मुवाफ़िक़ कर दिया जाता तो** (सारी दुनिया में कुफ़्र व शिर्क फैल जाता और उसका असर यह होता कि अल्लाह तआ़ला का गुस्सा सारी दुनिया पर उतरता जिससे) **सभी आसमान और ज़मीन और जो**

उनमें (आबाद) **हैं सब तबाह हो जाते** (जैसा क़ियामत में सभी इन्सानों में गुमराही फैल जाने की वजह से अल्लाह तआ़ला का ग़ुस्सा सब पर होगा और सब कुछ हलाक हो जाएगा, और इन लोगों में सिर्फ़ ये ही एक ऐब नहीं कि हक़ से नफ़रत हो) **बल्कि** (इससे भी बढ़ कर यह कि हक़ पर चलना जो उन्हीं के नफ़े का सामान है उससे दूर भागते हैं बस) **हम ने उन के पास उन की नसीहत** (और नफ़े) **की बात भेजी सो ये लोग अपनी नसीहत से भी मुंह मोड़ते हैं**(71) **या** (उनके झुटलाने की यह वजह है कि उन को यह शक हुआ हो कि) **आप उनसे कुछ आमदनी चाहते हैं तो** (यह भी ग़लत है क्योंकि जब आप जानते हैं कि) **आप के रब का दिया हुआ सब से अच्छा है, और वो सब देने वालों से अच्छा है** (तो आप लोगों से क्यों मांगते)(72) **और** (निचोड़ उन की हालत का यह है कि) **आप तो उन्हें सीधे रास्ते की तरफ़** (यानी दीने हक़ की तरफ़) **बुला रहे हैं**(73) **और उन लोगों की जो आख़रत पर ईमान नहीं रखते यह हालत है कि उस** (सीधे) **रास्ते से हटे जाते हैं**(74) **और** (उन की सख़्ती व हटधर्मी की यह हालत है कि) **अगर हम उन पर महरबानी कर दें और उनकी तकलीफ़ को हम दूर भी कर दें तो वो लोग** (फिर) **अपनी गुमराही में भटकते हुए** (सरकशी में) **जमे रहें** (और वो वादे जो मुसीबत में किये थे सब ख़त्म हो जाएं)(75) **और** (सुबूत इस का यह है कि कभी-कभी) **हम ने उन को अज़ाब में पकड़ा भी है तो** (उस वक़्त भी) **वो लोग न अपने रब के सामने** (पूरी तरह) **झुके और न गिड़गिड़ाए** (बस जब मुसीबत में भी नहीं झुके तो मुसीबत दूर होने के बाद क्या उम्मीद हो)(76) **यहां तक कि हम जब उन पर सख़्त अज़ाब का दरवाज़ा खोल देंगे** (चाहे दुनिया ही में कि कोई बड़ी मुसीबत आजाए या मौत के बाद तो ज़रूर ही होगा) **तो उस वक़्त बिल्कुल हैरान रह जाएंगे** (कि यह क्या हो गया और सब नशा दूर हो जाएगा)(77)

नोटः- जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बद दुआ से मक्के में क़हत आया यानी अकाल का अज़ाब और लोग भूखे मरने लगे मुरदार खाने पर मजबूर हो गए तो अबू सुफ़ियान ने आप से दुआ की दरख़्वास्त की और वो अज़ाब दूर हो गया मगर लोग फिर भी अपने रब के सामने नहीं झुके और शिर्क व कुफ़्र पर उसी तरह जमे रहे।

وَ هُوَ الَّذِیْٓ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَ الْاَبْصَارَ وَ الْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِیْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝٧٨ وَ هُوَ الَّذِیْ ذَرَاَكُمْ فِی الْاَرْضِ وَ
اِلَیْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝٧٩ وَ هُوَ الَّذِیْ یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ وَ لَهُ اخْتِلَافُ الَّیْلِ وَ النَّهَارِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٨٠ بَلْ قَالُوْا مِثْلَ

مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿۸۱﴾ قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَ كُنَّا تُرَابًا وَّ عِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿۸۲﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَ اٰبَآؤُنَا هٰذَا
مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۸۳﴾ قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَ مَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۴﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ
قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۸۵﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿۸۶﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا
تَتَّقُوْنَ ﴿۸۷﴾ قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّ هُوَ يُجِيْرُ وَ لَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۸﴾ سَيَقُوْلُوْنَ
لِلّٰهِ ؕ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿۸۹﴾ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۹۰﴾ مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّ مَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ
اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۭ بِمَا خَلَقَ وَ لَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۹۱﴾ عٰلِمِ الْغَيْبِ وَ
الشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۹۲﴾

आयत नं० 78 से 92

और वो (अल्लाह) **ऐसा** (कुदरत वाला और नेमतें देने वाला) **है जिसने तुम्हारे लिए कान और आंखें और दिल बनाए** (कि आराम भी बरतो और दीन को भी समझो, लेकिन) **तुम लोग बहुत ही कम शुक्र करते हो** (क्योंकि असली शुक्र यह था कि उस नेमतें देने वाले के पसन्दीदा दीन को मानते और दोबारा क़ियामत में ज़िन्दा करने का इनकार न करते)(78) **और वो ऐसा है जिसने तुम को ज़मीन में फैला रक्खा है और तुम सब** (क़ियामत में) **उसी के पास लाए जाओगे** (उस वक़्त इस नाशुक्री की असलीयत का पता लगेगा)(79) **और वो ऐसा है जो ज़िन्दगी और मौत देता है और उसी के बस में है रात और दिन का घटना बढ़ना, सो क्या तुम** (इतनी बात) **नहीं समझते** (कि ये दोनो कुदरत की निशानी तौहीद और क़ियामत में दूसरी ज़िन्दगी दोनो पर दलील हैं)(80) **बल्कि** (फिर भी नहीं मानते और) **ये भी वैसी ही बात कहते हैं जो पहले** (काफ़िर) **लोग कहते चले आए हैं**(81) (यानी) **यह कहते हैं कि क्या हम जब मर जाएंगे और हम मिट्टी और हड्डियां रह जाएंगे तो क्या हम दोबारा ज़िन्दा किये जाएंगे**(82) **उस का तो हम से और** (हम से) **पहले हमारे बड़ों से वादा होता चला आया है यह कुछ भी नहीं सिर्फ़ बेसनद बातें** (और कहानियां) **हैं जो पहले लोगों से कही चली आती हैं**(83) **आप** (जवाब में) **कह दीजिए कि** (अच्छा) **इस ज़मीन और इसमें बसने वालों का मालिक कौन है** (बताओ) **अगर तुम जानते हो**(84) **वो ज़रूर ये ही कहेंगे कि अल्लाह** (मालिक) **है,** (तो) **उन से कहिए कि फिर** (उसकी तौहीद और उस की कुदरत के बारे में) **क्यों नहीं सोचते**(85) (और) **आप यह भी कहिए कि**

(अच्छा यह बताओ कि) **इन सात आसमानों का मालिक और आलीशान अर्श का मालिक कौन है**(86) (उस का भी) **वो ज़रूर ये ही जवाब देंगे कि यह भी** (सब) **अल्लाह का है, आप** (उस वक़्त) **कहिए कि फिर तुम** (उससे) **क्यों नहीं डरते** (कि उस की क़ुदरत और आयतों का इनकार करते हो)(87) **आप** (उससे) **यह भी कह दीजिए कि** (अच्छा) **वो कौन है कि हर चीज़ जिस के बस में है और वो** (जिस को चाहता है) **पनाह देता है और उसके मुक़ाबिले में कोई किसी को पनाह नहीं दे** (सकता यानी वो जब किसी को नफ़ा या नुक़सान पहुंचाना चाहे तो कोई रोक नहीं) **सकता** (बताओ) **अगर तुम कुछ जानते हो**(88) (तब भी जवाब में) **वो ज़रूर ये ही कहेंगे कि ये सब ख़ूबियां भी अल्लाह ही की हैं, आप** (उस वक़्त) **कहिए कि फिर तुम पर कैसा जादू हो गया** (है कि इन सब बातों का इक़रार है और तौहीद व क़ियामत का इनकार) **है**(89) (और ये क़ियामत की बातें कहानियां नहीं हैं) **बल्कि हम ने उन को सच्ची बात पहुंचाई है और बेशक ये** (ख़ुद ही) **झूटे हैं**(90) (और) **अल्लाह तआ़ला ने किसी को औलाद नहीं बनाया** (जैसा कि मुशरिक लोग फ़रिशतों के बारे में कहते थे) **और न उस के साथ कोई और ख़ुदा है अगर ऐसा होता तो हर ख़ुदा अपनी** (बनाई) **मख़लूक़ को** (बान्ट कर) **अलग कर लेता और** (फिर दुनिया के बादशाहों की तरह दूसरे की मख़लूक़ छीनने के लिए) **एक दूसरे पर चढ़ाई करता,** (फिर कितनी तबाही होती लेकिन दुनिया ऐसे ही चल रही है इससे साबित हुआ कि) **अल्लाह तआ़ला उन** (गन्दी) **बातों से पाक है जो ये लोग** (उसके बारे में) **बयान करते हैं**(91) (वो अल्लाह) **जानने वाला है सब छुपी और खुली बातों का बस वो उन लोगों के शिर्क से बहुत ऊपर है**(92)

قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ﴿٩٣﴾ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٤﴾ وَ اِنَّا عَلٰۤى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ
لَقٰدِرُوْنَ ﴿٩٥﴾ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ؕ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَ قُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ
الشَّيٰطِيْنِ ۙ﴿٩٧﴾ وَ اَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ۙ﴿٩٩﴾ لَعَلِّيْۤ اَعْمَلُ
صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ؕ وَ مِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٠٠﴾

आयत नं० 93 से 100

आप (अल्लाह तआ़ला से) **दुआ़ कीजिए कि या रब मेरे जिस अज़ाब की धमकी इन काफ़िरों को दी जा रही है अगर आप मेरे सामने ले आएं**(93) **या रब मेरे** (अगर ऐसा हुआ)

तो मुझ को उन ज़ालिम लोगों में शामिल न कीजिए(94) और यक़ीन जानो हम जिस बात की उन्हें धमकी दे रहे हैं उसे आप की आंखों के सामने लाने की पूरी क़ुदरत रखते हैं(95) (और जब तक उन पर अज़ाब न आए) **आप** (उनके साथ यह बरताव रखिए कि) **उन की बुराई को ऐसे बरताव से दूर कर दिया कीजिए जो बहुत ही अच्छा** (और नर्म) **हो,** (और आप अपने लिए बदला न लीजिए बल्कि हमारे हवाले कर दिया कीजिए) **हम अच्छी तरह जानते हैं जो कुछ ये** (आप के बारे में) **कहा करते हैं(96) और** (अगर आप को कभी गुस्सा आ जाया करे तो उसे दूर करने के लिए) **आप यह दुआ किया कीजिए कि या रब मेरे मैं आप की पनाह मांगता हूं शैतानों के बहकाने से(97) और या रब मेरे मैं आप की पनाह मांगता हूं इससे कि शैतान मेरे पास भी आएं(98)** (और ये काफ़िर अपने कुफ़्र व हटधर्मी से बाज़ नहीं आते) **यहां तक कि जब उनमें से किसी** (के सर) **पर मौत आ**(खड़ी हो)**ती है** (और आख़रत दिखाई देने लगती है) **उस वक़्त** (आंखे खुलती हैं और अपनी जहालत और कुफ़्र पर पछता कर) **कहता है कि या रब मेरे** (मुझ से मौत को टाल दीजिए और) **मुझ को** (दुनिया में) **फिर वापिस भेज दीजिए(99) ताकि जिस** (दुनिया) **को मैं छोड़ आया हूं उसमें** (फिर जाकर) **नेक काम करूं** (अल्लाह तआ़ला कहते हैं कि) **हरगिज़** (ऐसा) **नहीं** (होगा), **यह** (उस की) **एक बात ही बात है जिस को यह कहे जा रहा है** (और पूरी होने वाली नहीं), **और** (वजह उस की यह है कि) **उन लोगों के आगे एक** (चीज़) **रूकावट** (की आने वाली) **है** (कि जिस का आना ज़रूरी है और वो ही दुनिया में वापिस आने से रूकावट है यानी मौत कि उस का वक़्त पर आना भी ज़रूरी और मौत के बाद दुनिया में लौट कर आना भी) **क़ियामत के दिन तक** (अल्लाह के क़ानून के ख़िलाफ़ है)(100)।

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मौत के वक़्त मोमिन जब रहमत के फ़रिशते और रहमत के सामान सामने देखने लगता है तो फ़रिशते उससे पूछते हैं कि क्या तुम चाहते हो कि फिर तुम्हें दुनिया में वापस कर दिया जाए तो वो कहता है कि मैं उस ग़मों और तकलीफ़ों की दुनिया में जाकर क्या करूंगा। मुझे तो अब अल्लाह के पास ले जाओ और काफ़िर से पूछते हैं तो वो कहता है मुझे दुनिया में लौटा दो। (इब्ने कसीर)

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَآ أَنسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّ لَا يَتَسَآءَلُونَ ﴿١٠١﴾ فَمَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰٓئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ﴿١٠٢﴾ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوٓا أَنفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَٰلِدُونَ ﴿١٠٣﴾ تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ

النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾ اَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٠٥﴾ قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا
شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ ﴿١٠٦﴾ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ﴿١٠٧﴾ قَالَ اخْسَـُٔوْا فِيْهَا وَلَا
تُكَلِّمُوْنِ ﴿١٠٨﴾ اِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِيْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾
فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰٓى اَنْسَوْكُمْ ذِكْرِيْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ ﴿١١٠﴾ اِنِّيْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْٓا ۙ
اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿١١١﴾ قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْـَٔلِ
الْعَآدِّيْنَ ﴿١١٣﴾ قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١٤﴾ اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا
لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾

आयत नं० 101 से 115

फिर जब (क़ियामत का दिन होगा और) **सूर फूंका जाएगा तो** (ऐसे डरे होंगे कि) **उन में** (जो) **रिशते नाते** (थे) **उस दिन** (जैसे वो भी) **न रहेंगे** (यानी कोई किसी की हमदर्दी न करेगा जैसे अन्जान-अन्जान होते हैं) **और न कोई किसी को पूछेगा** (कि भाई तुम किस हाल में हो यानी न रिशता नाता काम आएगा न दोस्ती और जान पहचान बस वहां ईमान काम आएगा बस कोई किसी के काम न आए यह हालत काफ़िरों की होगी और वहां अक़ीदों व नेकियों को तौला जाएगा)(101) **सो जिस आदमी का पल्ला** (ईमान का) **भारी होगा** (यानी वो मोमिन होगा) **तो ऐसे लोग कामयाब होंगे** (यानी बख़्शे जाएंगे और न उन को डर दहशत होगी)(102) **और जिस आदमी का पल्ला** (ईमान का) **हल्का होगा** (यानी वो काफ़िर होगा) **सो ये लोग वो होंगे जिन्होंने अपना नुक़सान कर लिया और जहन्नम में सदा के लिए रहेंगे**(103) **उन के चेहरों को** (उस जहन्नम की) **आग झुलसती होगी और उस** (जहन्नम) **में उन की सूरतें बिगड़ जाएंगी**(104) (और उन से पूछा जाएगा कि) **क्यों क्या मेरी आयतें** (दुनिया में) **तुम को पढ़ कर सुनाई नहीं जाया करतीं थीं और तुम उन को झुटलाया करते थे** (यह उस की सज़ा मिल रही है)(105) **वो कहेंगे कि या रब हमारे** (सचमुच) **हमारी बदनसीबी ने हम को** (हमारे हाथों) **घेर लिया था और** (बेशक) **हम गुमराह लोग थे** (यानी हम जुर्म का इक़रार करते और उस पर पछताते हैं)(106) **या रब हमारे हम को इस** (जहन्नम) **से** (अब) **निकाल दीजिए** (और दोबारा दुनिया में भेज दीजिए) **फिर अगर हम दोबारा** (ऐसा) **करें तो हम बेशक क़ुसूरवार हैं** (उस वक़्त हम को ख़ूब सज़ा दीजिए और अब छोड़ दीजिए)(107) **कहा जाएगा कि इसी** (जहन्नम) **में ज़लील होकर पड़े रहो और मुझ से बात मत**

करो(108) (क्या तुम को याद नहीं रहा कि) **मेरे बन्दों में एक गिरोह** (ईमान दारों का) **था जो** (बेचारे हम से) **दुआ किया करते थे कि या रब हमारे हम ईमान ले आए सो हम को मुआफ़ कर दीजिए और हम पर रहम कीजिए और आप सब रहम करने वालों से बढ़ कर रहम करने वाले हैं**(109) **सो तुम ने** (सिर्फ़ इस बात पर जो हर तरह क़द्र के क़ाबिल थी) **उन का मज़ाक़ बनाया** (और) **यहां तक** (उस का खेल बनाया) **कि उन की** (साथ) **छेड़** (छाड़) **ने तुम को हमारी याद भी भुला दी और तुम उन से हंसी किया करते थे**(110) (सो उन का तो कुछ न बिगड़ा कुछ दिन की तकलीफ़ थी कि सब्र करना पड़ा जिस का यह नतीजा मिला कि) **मैंने उन को आज उन के सब्र का यह बदला दिया कि वो ही कामयाब हुए** (और तुम इस नाकामी में पकड़े गये मतलब जवाब का यह हुआ कि तुम्हारा क़ुसूर इस क़ाबिल नहीं कि सज़ा के वक़्त इक़रार करने से मुआफ़ कर दिया जाए)(111) **कहा जाएगा** (उन दोज़ख़ियों से) **कि** (अच्छा यह बताओ कि) **कि तुम सालों की गिनती** (के हिसाब) **से कितना ज़माना ज़मीन में रहे होंगे**(112) (वहां की मुसीबत को देख कर) **वो जवाब देंगे कि** (साल कैसे बहुत रहे होंगे तो) **एक दिन या एक दिन से भी कम रहे होंगे** (और सच यह है कि हम को याद नहीं) **सो गिनने वालों से** (यानी फ़रिश्तों से कि कामों और उम्रों का हिसाब करते थे उन से) **पूछ लीजिए**(113) **कहा जाएगा कि** (एक दिन या उससे भी कम तो ग़लत है मगर इतना तो तुम्हारे इक़रार से भी साबित हो गया जो कि सही है कि) **तुम** (दुनिया में) **थोड़ी ही मुद्दत रहे** (लेकिन) **क्या अच्छा होता कि तुम** (यह बात उस वक़्त) **समझते होते** (कि हम को यहां थोड़े ही दिनों रहना है फिर सदा के लिए कहीं और जाना है और हिसाब देना है)(114) **हां तो क्या तुम ने यह सोचा था कि हम ने तुम को यूं ही बेकार** (बेमतलब) **पैदा कर दिया है और यह** (सोचा था) **कि तुम हमारे पास नहीं लाए जाओगे**(115)

नोटः- एक हदीस में है कि क़ियामत के दिन जिस वक़्त महशर में सब पियासे होंगे तो मुसलमान बच्चे जो नाबालिग़ी की हालत में मर गये थे वो जन्नत का पानी लिए हुए निकलेंगे लोग उन से पानी मांगेंगे तो वो कहेंगे कि हम तो अपने मां बाप को तलाश कर रहे हैं यह पानी उनके लिए है। (मज़हरी)

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿۱۱۶﴾ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ
بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۱۱۸﴾

आयत नं० 116 से 118

(और ये सब बातें जब जान चुके) **तो** (इससे यह पूरी तरह साबित हो गया कि) **अल्लाह तआ़ला बहुत ही ऊंची शान वाला है जो कि बादशाह** (है और बादशाह भी) **सच्चा है, उसके सिवा कोई भी इबादत के लाइक़ नहीं** (और वो) **इ़ज़्ज़त वाले अर्श का मालिक है**(116) **और जो आदमी** (यह बात साबित हो जाने के बाद) **अल्लाह तआ़ला के साथ किसी और माबूद की भी इबादत करे कि जिस** (के माबूद होने) **पर उस के पास कोई भी दलील नहीं तो उस का हिसाब उसके रब के यहां होगा,** (जिस का नतीजा यह होना है कि) **बेशक काफ़िरों को कामयाबी न होगी** (बल्कि सदा-सदा अज़ाब में रहेंगे)(117) **और** (जब अल्लाह तआ़ला की यह शान है तो) **आप** (और दूसरे लोग भी दुआ़ में) **यह कहा करें कि या रब मेरे** (मेरी खताएं) **मुआफ़ कर दीजिए और** (हर हालत में मुझ पर) **रहम कीजिए** (रोज़गार में भी, ताबेदारी की तौफ़ीक़ में भी, आख़रत की मुआफ़ी में भी और जन्नत देने में भी) **और आप सब रहम करने वालों से बढ़ कर रहम करने वाले हैं**(118)

नोटः- यह दुआ "रब्बिग़फ़िर वरहम व अन्ता ख़ैरूर्राहिमीन" असल में उम्मत को सिखाने के लिए है वर्ना नबी तो मासूम और सरापा रहमत के साय में हैं।

24-सूरत-नूर

इस मदनी सूरत में '9' रूकू और '102' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَ فَرَضْنٰهَا وَ اَنْزَلْنَا فِيْهَاۤ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝١ اَلزَّانِيَةُ وَ الزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ
مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۪ وَّ لَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَ
لْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢

आयत नं० 01 से 02

यह एक सूरत है जिस को हम ने उतारा है और इस (के हुक्मों) **को** (भी) **हम** (ही) **ने तय किया है** (चाहे वो फ़र्ज़ या वाजिब हों या मुस्तहब) **और हम ने** (इन हुक्मों के सबूत में) **इस** (सूरत) **में साफ़-साफ़ आयतें उतारी हैं ताकि तुम समझो** (और अमल करो)**(01) बदकारी करने वाली औरत और बदकारी करने वाला मर्द** (दोनों का हुक्म यह है कि) **उन में से हर एक के सौ-सौ कोड़े मारो, और तुम लोगों को उन दोनो पर अल्लाह के दीन के बारे में तरस न आना चाहिए** (कि तरस खाकर छोड़ दो या सज़ा में कमी कर दो) **अगर तुम अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखते हो, और दोनो की सज़ा के वक़्त मुसलमानों का एक मजमा मौजूद रहना चाहिए** (ताकि उन की रूसवाई हो और देखने सुनने वालों को नसीहत हो)**(02)**

नोटः- सौ कोड़े मारने का हुक्म कुंवारे मर्द व कुंवारी औरत के लिए है शादी शुदा मर्द व शादी शुदा औरत की सज़ा पथराव करके जान से मार देना है जो हदीस से साबित है।

اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۫ وَّ الزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَاۤ اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَ حُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى
الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٣ وَ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّ لَا

تَقۡبَلُوۡا لَهُمۡ شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الۡفٰسِقُوۡنَ ۙ ﴿۴﴾ اِلَّا الَّذِيۡنَ تَابُوۡا مِنۡۢ بَعۡدِ ذٰلِكَ وَ اَصۡلَحُوۡا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ
غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۵﴾

आयत नं० 03 से 05

(बदकारी ऐसी गन्दी चीज़ है उससे इन्सान का मन ही ख़राब हो जाता है उस का लगाव बुरी ही चीज़ की तरफ़ हो जाता है ऐसे आदमी की तरफ़ झुकाव ऐसे ही आदमी का हो सकता है जो बिगड़ा हुआ हो इसलिए) **बदकार मर्द** (अपनी बदकारी की वजह से) **निकाह भी किसी के साथ** (पसन्द) **नहीं करता सिवाए बदकार या मुशरिक औरत के, और** (इसी तरह) **बदकार औरत के साथ भी और कोई निकाह** (पसन्द) **नहीं करता सिवाए बदकार या मुशरिक मर्द के, और यह** (ऐसा निकाह जिस का नतीजा आगे भी बदकारी में पड़े रहना हो या किसी मुशरिक औरत के साथ हो) **मुसलमानों पर हराम** (और गुनाह) **किया गया है** (लेकिन अगर कोई बदकार से निकाह कर ले तो निकाह तो हो जाएगा मगर गुनाह होगा और मुशरिक से निकाह ही नहीं होगा)**(03) और जो लोग** (बदकारी का) **झूटा इलज़ाम लगाएं पाक दामन औरतों को** (जिन का बदकार होना किसी दलील से साबित नहीं) **और फिर चार गवाह** (अपने दावे पर) **न ला सकें तो ऐसे लोगों को अस्सी कोड़े लगाओ और उनकी कोई गवाही कभी न मानो** (यह भी झूटा इल्ज़ाम लगाने ही का हिस्सा है कि वो सदा के लिए गवाही के क़ाबिल न होंगे यह तो दुनिया की सज़ा का ज़िक्र था) **और ये लोग** (आख़रत में भी सज़ा के हक़दार हैं क्योंकि) **फ़ासिक़** (यानी बड़े गुनाहगार) **हैं(04) लेकिन जो लोग उस के बाद** (अल्लाह के सामने) **तौबा करलें** (क्योंकि झूटा इल्ज़ाम लगाने में उन्होंने अल्लाह की नाफ़रमानी की) **और** (जिस पर इल्ज़ाम लगाया था उससे मुआफ़ कराकर भी) **अपना सुधार करलें** (क्योंकि उस को दुख पहुंचाया था) **तो अल्लाह तआला ज़रूर मुआफ़ करने वाले रहमत करने वाले हैं** (यानी सच्ची तौबा करने से आख़रत की सज़ा मुआफ़ हो जाएगी लेकिन दुनिया की सज़ा बाक़ी रहेगी**(05)**

नोटः- जिस पर झूटा इल्ज़ाम लगाया गया था अगर वो मुआफ़ कर दे तो झूटा इलज़ाम लगाने वाले की सज़ा मुआफ़ हो जाएगी। मगर बदकारी करने वालों की सज़ा मुआफ़ नहीं हो सकती।

وَ الَّذِيۡنَ يَرۡمُوۡنَ اَزۡوَاجَهُمۡ وَ لَمۡ يَكُنۡ لَّهُمۡ شُهَدَآءُ اِلَّاۤ اَنۡفُسُهُمۡ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمۡ اَرۡبَعُ شَهٰدٰتٍۢ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ
لَمِنَ الصّٰدِقِيۡنَ ﴿۶﴾ وَ الۡخَامِسَةُ اَنَّ لَعۡنَتَ اللّٰهِ عَلَيۡهِ اِنۡ كَانَ مِنَ الۡكٰذِبِيۡنَ ﴿۷﴾ وَ يَدۡرَؤُا عَنۡهَا الۡعَذَابَ اَنۡ

تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الْكٰذِبِیْنَ ﴿۸﴾ وَ الْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَیْهَاۤ اِنْ كَانَ مِنَ
الصّٰدِقِیْنَ ﴿۹﴾ وَ لَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَیْكُمْ وَ رَحْمَتُهٗ وَ اَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِیْمٌ ﴿۱۰﴾

आयत नं० 06 से 10

और जो लोग अपनी बीवियों पर (बदकारी का) **इलज़ाम लगाएं और उनके पास सिवाए अपने** (ही दावे के) **और कोई गवाह न हों** (जो गिनती में चार होने ज़रूरी हैं) **तो उन की गवाही ये ही है कि चार बार अल्लाह की क़सम खाकर यह कहदे कि बेशक मैं सच्चा हूं(06) और पांचवी बार यह कहे कि मुझ पर अल्लाह की फिटकार हो अगर मैं झूटा हूं(07) और** (उसके बाद) **उस औरत से** (बदकारी की) **सज़ा इस तरह टल सकती है कि वो चार बार क़सम खा कर कहे कि बेशक यह मर्द झूटा है(08) और पांचवी बार यह कहे कि मुझ पर अल्लाह का ग़ज़ब हो अगर यह मर्द सच्चा हो** (इस तरह से दोनों मियां बीवी दुनिया की सज़ा से बच सकते हैं लेकिन उन में जो झूटा होगा आख़रत की सज़ा उस पर बढ़ जाएगी और वो औरत उस मर्द पर हराम हो जाएगी और इस क़सम खिलवाने को लिआन कहते हैं)**(09) और अगर तुम पर अल्लाह तआ़ला का करम और महरबानी न होती और यह** (बात न होती) **कि अल्लाह तआ़ला तौबा क़ुबूल करने वाले हिकमत वाले हैं तो तुम बड़े नुक़सान में पड़ जाते(10)**

नोटः- जब दो मियां बीवी के बीच हाकिम के सामने लिआन हो जाए तो यह औरत उस मर्द पर सदा के लिए हराम हो जाती है फिर कभी भी उन का निकाह नहीं हो सकता।

اِنَّ الَّذِیْنَ جَآءُوْ بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ؕ لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ؕ بَلْ هُوَ خَیْرٌ لَّكُمْ ؕ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا
اكْتَسَبَ مِنَ الْاِثْمِ ۚ وَ الَّذِیْ تَوَلّٰى كِبْرَهٗ مِنْهُمْ لَهٗ عَذَابٌ عَظِیْمٌ ﴿۱۱﴾ لَوْ لَاۤ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَ
الْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ خَیْرًا ۙ وَّ قَالُوْا هٰذَاۤ اِفْكٌ مُّبِیْنٌ ﴿۱۲﴾ لَوْ لَا جَآءُوْ عَلَیْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ یَاْتُوْا
بِالشُّهَدَآءِ فَاُولٰٓىٕكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿۱۳﴾ وَ لَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَیْكُمْ وَ رَحْمَتُهٗ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ
فِیْ مَاۤ اَفَضْتُمْ فِیْهِ عَذَابٌ عَظِیْمٌ ﴿۱۴﴾ اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَ تَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَیْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّ
تَحْسَبُوْنَهٗ هَیِّنًا ۖۗ وَّ هُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِیْمٌ ﴿۱۵﴾ وَ لَوْ لَاۤ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا یَكُوْنُ لَنَاۤ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۗ

سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ﴿١٦﴾ يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖٓ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧﴾ وَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ
لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ
فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَ اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٩﴾ وَ لَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ رَحْمَتُهٗ وَ اَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ
رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ وَمَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَ
الْمُنْكَرِ ؕ وَ لَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ رَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّ لٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢١﴾ وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَ السَّعَةِ اَنْ يُّؤْتُوْٓا اُولِي الْقُرْبٰى وَ الْمَسٰكِيْنَ وَ الْمُهٰجِرِيْنَ فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ وَ لْيَعْفُوْا وَ لْيَصْفَحُوْا ؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٢﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ
الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ۪ وَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾ يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ
اَلْسِنَتُهُمْ وَ اَيْدِيْهِمْ وَ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾ يَوْمَئِذٍ يُّوَفِّيْهِمُ اللّٰهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ وَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ
هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ﴿٢٥﴾ اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَ الْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَ الطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَ الطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ
اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٦﴾

आयत नं० 11 से 26

नोटः- एक बार सफ़र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवी हज़रत आइशा रज़ि० उनके साथ थी एक रात रास्ते में जब क़ाफ़िला ठहरा और सब अपनी-अपनी ज़रूरत पूरी करने के बाद चले उस वक़्त हज़रत आइशा इस्तन्जे के लिए ज़रा दूर गई हुई थीं और पालकी उठाने वालों ने समझा कि वो पालकी में हैं और हज़रत आइशा बदन में बहुत हल्की थीं इसलिए उठाने वालों को सही अन्दाज़ा न हुआ और पालकी ऊंट पर रख दी और क़ाफ़िला रवाना हो गया कुछ देर बाद पता चला कि हज़रत आइशा पालकी में नहीं हैं तो क़ाफ़िला ठहर गया। उधर हज़रत आइशा ज़रूरत पूरी होने के बाद वापस आईं तो क़ाफ़िला न देख कर वहीं रूक गईं कि उन की तलाश में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा को यहीं भेजेंगे। पीछे से हज़रत सफ़वान रज़ि० आगये जो पीछे चलते थे कि किसी की कोई चीज़ रह जाए तो उठा लाएं वो हज़रत आइशा को इज़्ज़त के साथ लेकर क़ाफ़िले में आमिले। इस थोड़ी देर के बिछुड़ने को लेकर कुछ दुशमन मुनाफ़िक़ों ने बुरी बातें उड़ानी शुरू कीं और धोके में आकर कुछ भोले भाले मुसलमान भी साथ लग गये वो

भी उन बातों का चर्चा करने लगे इन बातों से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को और मुसलमानों को बहुत दुःख हुआ इस पर ये आयतें उतरी जिन में हज़रत आइशा का पाक साफ़ होना बयान किया गया हैः-

जिन लोगों ने (हज़रत आइशा के बारे में) **यह तूफ़ान उठाया है** (ऐ मुसलमानो) **वो तुम में का एक** (छोटा सा) **गिरोह है, तुम इस** (बात) **को अपने हक़ में बुरा न समझो** (भले ही यह ग़म की बात है मगर असल में इससे तुम्हारा नुक़सान नहीं)**, बल्कि यह** (अन्जाम कार) **तुम्हारे हक़ में बेहतर ही बेहतर** (है क्योंकि इस ग़म से तुम को सब्र का सवाब मिला तुम्हारे दर्जे बढ़े और जिन पर झूटा इल्ज़ाम लगाया गया उनके पाक साफ़ होने के सबूत में आयतें उतरीं बल्कि उन चर्चा करने वालों का नुक़सान हुआ) **है,** (कि) **उनमें से हर आदमी को जितना किसी ने कुछ किया था गुनाह** (हुआ जैसे ज़बान से कहने वालों को ज़्यादा गुनाह और सुन कर चुप रह जाने वालों को या दिल से शक करने वालों को उसके हिसाब से गुनाह) **हुआ, और उनमें जिस ने उस** (तूफ़ान के फैलाने) **में सब से बड़ा हिस्सा लिया** (कि उस को घड़ा यानी अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़) **उस को** (सब से बढ़ कर) **सख़्त सज़ा होगी** (यानी जहन्नम का अज़ाब)(11) **जब तुम लोगों ने यह बात सुनी थी तो मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों ने अपने आपस वालों के बारे में** (यानी हज़रत आइशा और उन सहाबी के बारे में दिल से) **भली बात क्यों न सोची और** (ज़बान से) **यह क्यों न कहा कि यह खुला झूट है** (जैसा कि दूसरे सहाबा ने कहा)(12) **ये** (झूटा इल्ज़ाम लगाने वाले) **लोग उस** (अपने बयान) **पर चार गवाह क्यों न लाए** (जो कि बदकारी के सबूत के लिए शर्त है)**, सो अब तक कि ये लोग** (क़ाइदे के मुवाफ़िक़) **गवाह नहीं लाए तो बस अल्लाह के** (क़ानून के) **नज़दीक झूटे हैं**(13) **और** (आगे इल्ज़ाम लगाने वालों में जो मोमिन थे उन पर भी रहमत का ज़िक्र है कि) **अगर तुम पर अल्लाह तआ़ला की महरबानी और रहमत न होती दुनिया में** (भी कि तौबा की मोहलत दी) **और आख़रत में** (भी कि तौबा की तौफ़ीक़ दी और उस को क़ुबूल भी कर लिया अगर यह न होता) **तो जिन बातों में तुम पड़ गये थे उस की वजह से तुम पर** (उस वक़्त) **सख़्त अज़ाब आ जाता**(14) **जब कि तुम उस** (झूट बात) **को अपनी ज़बानों से एक दूसरे से कह रहे थे और अपने मुंह से ऐसी बात कह रहे थे जिस की तुम को** (किसी दलील से) **कोई ख़बर नहीं** (और ऐसी बात कहने वाला झूटा होता है) **और तुम उस को हलकी बात समझ रहे थे जब कि वो अल्लाह के नज़दीक बहुत भारी** (यानी बहुत बड़े गुनाह की) **बात थी**

(एक तो किसी पाक दामन औरत पर बदकारी का इल्ज़ाम लगाना अपने आप में बड़ा गुनाह है फिर वो भी कौन हुज़ूर की पाक बीबियों में से कि उन पर झूटा इल्ज़ाम लगाना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ देना बस इस में बहुत से गुनाह जमा हो गये थे)(15) **और तुम ने जब इस बात को** (पहली बार) **सुना था तो यह क्यों न कहा कि हमें ऐसी बात मुंह से नहीं निकालनी चाहिए अल्लाह की पनाह यह तो बड़ा बोहतान** (यानी झूटा इलज़ाम) **है** (जैसा कि कुछ सहाबा ने इसी तरह कहा था)(16) **अल्लाह तआ़ला तुम को नसीहत करता है कि फिर कभी ऐसा न करना अगर तुम ईमान वाले हो**(17) **और अल्लाह तआ़ला तुम से साफ़-साफ़ हुक्म बयान करता है, और अल्लाह तआ़ला बड़ा जानने वाला हिकमत वाला है** (तुम्हारे दिल के पछतावे को भी जानता है इसलिए तौबा क़ुबूल करली और सियासत की हिकमत भी ख़ूब जानता है इसलिए तुम्हें दुनिया में सज़ा दी गई)(18) **जो लोग** (इन आयतों के उतरने के बाद भी) **चाहते हैं** (यानी इस की कोशिश करते हैं) **कि बेहयाई की बात का मुसलमानों में चर्चा हो** (यानी यह ख़बर फैले कि इन मुसलमानों में बेहयाई की बात है मतलब यह कि जो लोग इन पाक हस्तियों के बारे में बदकारी की बात करते हैं) **उन के लिए दुनिया व आख़रत में दर्दनाक सज़ा** (तय) **है, और** (इस बात पर सज़ा का अचम्भा मत करो क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला जानता है** (कि कौन गुनाह किस दर्जे का है) **और तुम** (इस की असलीयत पूरी) **नहीं जानते**(19) **और** (ऐ तौबा करने वालो) **अगर यह बात न होती कि तुम पर अल्लाह तआ़ला की महरबानी व रहमत है** (जिसने तुम को तौबा की तौफ़ीक़ दी) **और यह कि अल्लाह बड़ा नर्मी करने वाला रहमत वाला है** (जिस ने तुम्हारी तौबा क़ुबूल करली) **तो तुम भी** (इस धमकी से) **न बचते**(20) **ऐ ईमान वालो तुम शैतान के पीछे मत चलो** (यानी उसके बहकाने में न आओ), **और जो आदमी शैतान के पीछे चलता है तो वो** (सदा हर आदमी को) **बेहयाई और बुराई ही का काम करने को कहेगा** (जैसा इस क़िस्से में तुम ने देख लिया), **और अगर तुम पर अल्लाह तआ़ला की महरबानी और रहमत न होती तो तुम में से कोई कभी भी** (तौबा करके) **पाक साफ़ न होता** (या तो तौबा की तौफ़ीक़ ही न होती जैसा मुनाफ़िक़ों को न हुई और या तौबा क़ुबूल न की जाती क्योंकि कोई चीज़ हमारे ज़िम्मे तो है नहीं) **लेकिन अल्लाह तआ़ला जिस को चाहता है** (तौबा की तौफ़ीक़ देकर) **पाक व साफ़ कर देता है, और अल्लाह तआ़ला सब कुछ सुनता सब कुछ जानता** (है बस तुम्हारी तौबा सुन ली और तुम्हारे पछतावे को जान लिया इसलिए महरबानी की) **है**(21) **और** (आगे इस का बयान है कि कुछ सहाबा ने जिनमें हज़रत आइशा के वालिद हज़रत अबूबक्र रज़ि० भी हैं गुस्से की हालत में क़सम खाली कि जिस जिस ने यह चर्चा किया है

जिनमें बहुत ग़रीब भी थे उन को अब किसी क़िस्म की माली मदद न करेंगे अल्लाह तआ़ला उन को मुआफ़ करने और मदद जारी कर देने को कहते हैं कि) **जो लोग तुम में बड़े दर्जे वाले और गुन्जाइश वाले हैं वो रिश्तेदारों को और ग़रीबों को और अल्लाह के रास्ते में हिजरत करने वालों को कुछ न देने की क़सम न खा बैठें** (यानी अगर ऐसी क़सम खाली है तो उस पर जमे न रहें बल्कि तोड़ दें) **और चाहिए कि मुआफ़ कर दें और दरगुज़र से काम लें, क्या तुम यह बात नहीं चाहते कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे क़ुसूर मुआफ़ कर दे** (सो तुम भी अपने क़ुसूरवारों को मुआफ़ कर दो) **बेशक अल्लाह तआ़ला मुआफ़ करने वाले रहम करने वाले है(22)** (आगे मुनाफ़िक़ों को धमकी है यानी) **जो लोग** (आयतों के उतर जाने के बाद बदकारी का) **झूटा इलज़ाम लगाते हैं उन औरतों पर जो पाक दामन हैं** (और) **ऐसी बातों** (के करने और उसके इरादे) **से** (भी) **अन्जान हैं और ईमान वाली** (हैं और जिन की पाकी क़ुरआन से साबित हो चुकी है तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सभी बीवियां पाक हैं उन पर इलज़ाम लगाने वाले मुनाफ़िक़ और काफ़िर हो सकते) **हैं उन पर दुनिया और आख़रत में लानत की जाती है** (यानी ऐसे लोग काफ़िर हैं), **और उन को** (आख़रत में) **बड़ा अज़ाब होगा(23) जिस दिन उन के ख़िलाफ़ उन की ज़बानें गवाही देंगी और उन के हाथ और उनके पैर भी** (गवाही देंगे) **उन कामों की जो कि ये लोग किया करते थे(24) उस दिन अल्लाह तआ़ला उन को वो बदला पूरा-पूरा देगा जिस के वो हक़दार हैं और** (उस दिन ठीक-ठीक) **उन को पता चल जाएगा कि अल्लाह ही ठीक फ़ैसला करने वाला** (और) **बात** (की असलीयत) **को खोल देने वाला है(25) गन्दी औरतें गन्दे मर्दों के लाइक़ होती हैं और गन्दे मर्द गन्दी औरतों के लाइक़ होते हैं और पाक साफ़ औरतें पाक साफ़ मर्दों के लाइक़ होती हैं और पाक साफ़ मर्द पाक साफ़ औरतों के लाइक़ होते हैं** (और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हर चीज़ आप के लाइक़ ही दी गई है और वो पाक ही चीज़ें हैं तो ज़रूर आप की बीवी भी पाक हैं उन के बारे में शक वो ही कर सकता है जिस का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान न हो इसी से साबित हुआ कि हज़रत सफ़वान भी बेक़ुसूर हैं इसी लिए आगे बताया जाता है कि) **ये** (पाक हस्तियां) **उस बात से पाक हैं जो ये** (मुनाफ़िक़) **बकते फिरते हैं, उन** (हस्तियों) **के लिए** (आख़रत में) **मुआफ़ी और इज़्ज़त की रोज़ी** (यानी जन्नत) **है(26)।**

नोटः- हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि किसी नबी की औरत ने कभी बदकारी नहीं की।
(दुर्रे मन्सूर)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَ تُسَلِّمُوْا عَلٰۤى اَهْلِهَا ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَاۤ اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَ اِنْ قِيْلَ لَكُمُ ارْجِعُوْا
فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨﴾ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ
فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٢٩﴾

आयत नं० 27 से 29

ऐ ईमान वालो तुम अपने (ख़ास रहने के) **घरों के सिवा दूसरे घरों में मत जाओ** (जिनमें दूसरे लोग रहते हों चाहे वो उन के अपने हों या किराए पर लिए हों) **जब तक इजाज़त न लेलो और** (इजाज़त लेने से पहले) **उन के रहने वालों को सलाम न कर लो** (यानी पहले बाहर से सलाम करके फिर उन से पूछो कि क्या हमें अन्दर आने की इजाज़त है और बिना इजाज़त लिए वैसे ही मत घुस जाओ, चाहे कुछ लोग इजाज़त लेने को अपनी शान के ख़िलाफ़ समझें लेकिन असलीयत में) **ये ही** (तरीक़ा) **तुम्हारे लिए बेहतर है** (कि इजाज़त लेकर जाओ और यह बात तुम को इसलिए बताई) **ताकि तुम ध्यान रक्खो** (और इस पर अमल करो कि इसमें बड़ी भलाइयां छुपी हैं)(27) **फिर अगर उन घरों में तुम कोई आदमी न पाओ** (चाहे असलीयत में वहां कोई हो या न हो) **तो** (भी) **उन घरों में** (उस वक़्त तक) **न जाओ जब तक तुम को इजाज़त न मिल जाए** (क्योंकि बिना इजाज़त किसी के ख़ाली मकान में घुस जाना भी नाजाइज़ है)**, और अगर** (इजाज़त मांगने के वक़्त) **तुम से यह कह दिया जाए कि** (इस वक़्त) **लौट जाओ तुम लौट आया करो ये ही** (तरीक़ा) **तुम्हारे लिए बेहतर है** (यानी न वहां पर इन्तिज़ार में ठहरो और न ही मना करने का बुरा मानो)**, और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब कामों की ख़बर** (है अगर हुक्म के ख़िलाफ़ करोगे सज़ा पाओगे और ये ही हुक्म उस सूरत का है कि घर वालों ने चाहे लौट जाने को नहीं कहा मगर कोई बोला भी नहीं ऐसी हालत में तीन बार इजाज़त लेने पर कोई जवाब न आए तो लौट आना चाहिए जैसा कि हदीस में आया) **है**(28) (और) **तुम को ऐसे मकानों में** (बिना ख़ास इजाज़त के) **चले जाने में गुनाह न होगा जिन में** (घर की तरह) **कोई न रहता हो** (और) **उन में तुम्हारी ज़रूरत पूरी होती** (हो यानी उन मकानों के बरतने का तुम्हें हक़) **हो, और तुम जो कुछ ऐलानिया करते हो या छुपा कर करते हो अल्लाह तआ़ला सब जानता** (है इसलिए हर हाल में परहेज़गारी और अल्लाह का डर ज़रूरी) **है**(29)

नोटः- मर्दों की तरह औरतों को भी किसी घर में जाने से पहले इजाज़त लेना चाहिए भले ही उस घर में औरतें ही मौजूद हों। और अगर इजाज़त न मिले बल्कि यह कहा जाए कि इस वक़्त लौट जाइये तो लौट जाएं बुरा नहीं मानना चाहिए।

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَ يَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿۳۰﴾
وَ قُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَ يَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَ لَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَ
لْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۪ وَ لَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ
اَبْنَآئِهِنَّ اَوْ اَبْنَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْۤ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْۤ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَآئِهِنَّ اَوْ مَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيْنَ غَيْرِ اُولِي الْاِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰى عَوْرٰتِ النِّسَآءِ ۪ وَ لَا
يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ ؕ وَ تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ﴿۳۱﴾

आयत नं० 30 से 31

आप मुसलमान मर्दों से कह दीजिए कि अपनी नज़रें नीचे रक्खें (कि किसी को बुरी नीयत से न देखें और जिस चीज़ को देखना नाजाइज़ है उसे बिल्कुल न देखें) **और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त** (करें यानी बदकारी के काम न) **करें, यह उनके लिए ज़्यादा सफ़ाई की बात** (है और इसके ख़िलाफ़ करने में गन्दगी) **है, बेशक अल्लाह तआला को सब ख़बर है जो कुछ लोग किया करते हैं** (बस ख़िलाफ़ करने वाले सज़ा पाने के हक़दार होंगे)**(30) और** (इसी तरह) **मुसलमान औरतों से कह दीजिए कि** (वो भी) **अपनी नज़रें नीची रक्खें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें और अपनी सजावट** (किसी को) **न दिखाएं** (यानी बदन के उन हिस्सों को छुपाएं जो देखने वालों के दिल पर असर करते हैं) **सिवाए उस** (हिस्से) **के जो** (अकसर) **खुला** (ही) **रहता है** (जिसके हर वक़्त छुपाने में हरज है जैसे हाथ पैर और महरमों के सामने चेहरा भी) **और** (ख़ास कर सर और सीना ढकने का बहुत ध्यान रक्खें और) **अपने दुपट्टे** (जो सर के ढकने के लिए हैं) **अपने सीनों पर** (भी) **डाले रहा करें** (यानी दुपट्टा ऐसे ओढ़ें कि सर व सीना ढक जाए)**, और अपनी सजावट** (के हिस्से) **को** (किसी को) **न दिखाएं** (यानी सबसे पर्दा करें) **सिवाए अपने शौहरों के या**

(अपने महरमों के यानी) **अपने बाप या अपने शौहर के बाप के या अपने बेटों या अपने शौहर के बेटों के** (जो दूसरी बीवियों से हों) **या अपने भाइयों के** (जो अपने मां बाप से हों न कि चचा ज़ाद या मामू ज़ाद भाई) **या अपने** (उन) **भाइयों के बेटों के या अपनी** (सगी) **बहनों के बेटों के या अपनी** (दीन शरीक यानी मुसलमान) **औरतों के** (क्योंकि काफ़िर औरतों का हुक्म अजनबी मर्दों जैसा है) **या अपनी बान्दियों के** (चाहे वो काफ़िर ही हों) **या** (घरों में) **काम करने वाले उन मर्दों के जिन को** (कम समझ होने की वजह से औरतों की बातों की तरफ़) **ध्यान न हो या ऐसे लड़कों के जो औरतों के पर्दों की बातों से अभी अन्जान हैं** (यानी जो बच्चे अभी बालिग़ होने के नज़दीक नहीं पहुंचे और उन्हें उन बातों की कुछ ख़बर नहीं बस उन से पर्दा न करना भी जाइज़ है और शौहर के सामने किसी जगह का भी छुपाना वाजिब नहीं हां ख़ास बदन को देखना अच्छा नहीं), **और** (पर्दे का यहां तक ध्यान रक्खें कि चलने में) **अपने पांव ज़ोर से न रक्खें कि उनके छुपे ज़ेवर का पता चल जाए** (यानी ज़ेवरों की आवाज़ नामहरमों के कान तक पहुंचे), **और मुसलमानो** (तुम से जो हुक्मों की पाबन्दी में कमी हो गई हो तो) **तुम सब अल्लाह तआला के सामने तौबा करो ताकि तुम कामयाब हो जाओ** (वर्ना गुनाह से कामयाबी में रूकावट हो जाती है)(31)

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि अगर बिना इरादा अचानक किसी ग़ैर महरम औरत पर नज़र पड़ जाए तो क्या करना चाहिए तो आपने हुक्म दिया कि अपनी नज़र उस तरफ़ से फेर लो। (इब्ने कसीर)

وَ اَنۡكِحُوا الۡاَيَامٰى مِنۡكُمۡ وَ الصّٰلِحِيۡنَ مِنۡ عِبَادِكُمۡ وَ اِمَآئِكُمۡ ؕ اِنۡ يَّكُوۡنُوۡا فُقَرَآءَ يُغۡنِهِمُ اللّٰهُ مِنۡ فَضۡلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ
وَاسِعٌ عَلِيۡمٌ ﴿۳۲﴾ وَ لۡيَسۡتَعۡفِفِ الَّذِيۡنَ لَا يَجِدُوۡنَ نِكَاحًا حَتّٰى يُغۡنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنۡ فَضۡلِهٖ ؕ وَ الَّذِيۡنَ يَبۡتَغُوۡنَ
الۡكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتۡ اَيۡمَانُكُمۡ فَكَاتِبُوۡهُمۡ اِنۡ عَلِمۡتُمۡ فِيۡهِمۡ خَيۡرًا ۖ وَّ اٰتُوۡهُمۡ مِّنۡ مَّالِ اللّٰهِ الَّذِىۡۤ اٰتٰٮكُمۡ ؕ وَ لَا
تُكۡرِهُوۡا فَتَيٰتِكُمۡ عَلَى الۡبِغَآءِ اِنۡ اَرَدۡنَ تَحَصُّنًا لِّتَبۡتَغُوۡا عَرَضَ الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ؕ وَ مَنۡ يُّكۡرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنۡۢ
بَعۡدِ اِكۡرَاهِهِنَّ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۳۳﴾

आयत नं० 32 से 33

जो बेनिकाह हों (तुम में से मर्द या औरतें) **तुम उन का निकाह कर दिया करो और** (इसी तरह) **तुम्हारे ग़ुलाम और बान्दियों में जो इस** (निकाह) **के लाइक़ हों** (यानी निकाह के हक़ अदा

कर सकते हों निकाह कर दिया करो) **उन का भी,** (और) **अगर वो लोग ग़रीब होंगे तो अल्लाह तआ़ला** (अगर चाहेगा) **उन को अपनी महरबानी से मालदार कर देगा, और अल्लाह तआ़ला गुन्जाइश वाला है** (जिस को चाहे मालदार कर दे और सब का हाल) **ख़ूब जानने वाला है** (जिस को माल देने में भलाई समझेगा उस को मालदार कर देगा और जिसके ग़रीब ही रहने में भलाई है उस को ग़रीब रक्खा जाएगा)(32) **और** (अगर कोई अपनी ग़रीबी की वजह से निकाह का सामान न रखता हो तो) **ऐसे लोगों को जिनके पास निकाह का सामान नहीं उन को चाहिए कि** (अपने जी को) **थामे रहें यहां तक कि अल्लाह तआ़ला** (अगर चाहे तो) **उन को अपनी महरबानी से मालदार कर दे** (उस वक़्त निकाह कर लें), **और तुम्हारे ग़ुलाम बान्दियों में से जो मकातिब बनना चाहें तो** (बेहतर है कि) **उन को मकातिब बना दिया करो अगर उनमें भलाई** (की निशानी) **पाओ, और** (मुसलमानो) **अल्लाह के** (दिये हुए) **उस माल में से उन को भी दो जो अल्लाह ने तुम को दे रक्खा है** (ताकि जल्दी आज़ाद हो सकें), **और अपनी बान्दियों को बदकारी करने पर मजबूर न करो** (ख़ास कर) **जब वो पाकदामन रहना चाहें** (और तुम्हारा यह नीच काम) **सिर्फ़ इसलिए कि दुनिया की ज़िन्दगी का कुछ फ़ाइदा** (यानी माल) **तुम को मिल जाए, और जो आदमी उन को मजबूर करेगा** (और वो बचना चाहेंगी) **तो अल्लाह तआ़ला उन को मजबूर किये जाने के बाद** (उनको) **मुआफ़ करने वाला महरबान है**(33)

नोटः- अगर ग़ुलाम या बान्दी अपने मालिक से यह कहे कि आप मुझ पर कुछ माल तय कर दें कि वो माल मैं अपनी महनत से कमा कर के आप को अदा कर दूं तो मैं आज़ाद हो जाऊं और मालिक उस बात को मान ले तो ऐसा ग़ुलाम "मकातिब" कहलाता है।

وَ لَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكُمْ اٰیٰتٍ مُّبَیِّنٰتٍ وَّ مَثَلًا مِّنَ الَّذِیْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَ مَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِیْنَ ﴿۳۴﴾ اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ؕ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِیْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ فِیْ زُجَاجَةٍ ؕ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّیٌّ یُّوْقَدُ مِنْ
شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَیْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِیَّةٍ وَّ لَا غَرْبِیَّةٍ ۙ یَّكَادُ زَیْتُهَا یُضِیْٓءُ وَ لَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ
یَهْدِی اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَ یَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿۳۵﴾ فِیْ بُیُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ
اَنْ تُرْفَعَ وَ یُذْكَرَ فِیْهَا اسْمُهٗ ۙ یُسَبِّحُ لَهٗ فِیْهَا بِالْغُدُوِّ وَ الْاٰصَالِ ﴿۳۶﴾ رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِیْهِمْ تِجَارَةٌ وَّ لَا بَیْعٌ عَنْ
ذِكْرِ اللّٰهِ وَ اِقَامِ الصَّلٰوةِ وَ اِیْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۪ۙ یَخَافُوْنَ یَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِیْهِ الْقُلُوْبُ وَ الْاَبْصَارُ ﴿۳۷﴾ لِیَجْزِیَهُمُ اللّٰهُ

اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَ يَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ
كَسَرَابٍۭ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْــًٔا وَّ وَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ؕ وَ
اللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٣٩﴾ۙ اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِىْ بَحْرٍ لُّجِّىٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ؕ ظُلُمٰتٌۢ
بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ؕ اِذَآ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ﴿٤٠﴾ ع

आयत नं० 34 से 40

और हम ने (तुम लोगों की हिदायत के लिए इस कुरआन में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वास्ते से) **तुम्हारे पास खुले-खुले हुक्म भेजे हैं और जो लोग तुम से पहले हो चुके हैं उन की** (या उन जैसे लोगों की) **कुछ मिसालें और** (अल्लाह से) **डरने वालों के लिए नसीहत की बातें** (भेजी हैं)(34) **अल्लाह तआला** (हिदायत का) **नूर देने वाला है आसमानों** (में रहने वालों) **का और ज़मीन** (में रहने वालों) **का** (यानी आसमान व ज़मीन वालों में जिन को हिदायत हुई है उन सब को अल्लाह ही ने हिदायत दी है), **उस के** (हिदायत के) **नूर की मिसाल ऐसी है जैसे** (मानलो) **एक ताक़ है** (और) **उसमें एक चराग़** (रक्खा) **है,** (और) **वो चराग़** (ताक़ में रक्खे हुए) **एक शीशे** (की कन्दील) **में है,** (और) **वो शीशा ऐसा** (साफ़ और आर पार दिखाने वाला) **है जैसा कि एक चमकदार सितारा हो** (और) **वो चराग़ एक बहुत नफ़ा देने वाले पेड़** (के तेल) **से रौशन किया जाता है जो ज़ैतून** (का पेड़) **है जो** (किसी आड़ के) **न पूरब रूख़ है और न** (किसी आड़ के) **पच्छम रूख़ है** (यानी उस के पूरब या पच्छम की तरफ़ कोई आड़ पहाड़ नहीं बल्कि पूरे दिन धूप रहती है ऐसे पेड़ का तेल बहुत अच्छा साफ़ और रौशन होता है और) **उस का तेल** (ऐसा साफ़ और सुलगने वाला है कि) **अगर उस को आग भी न छुए तो भी ऐसा लगता है कि अपने आप ही जल उठेगा,** (और जब आग भी लग गई तो) **नूर पर नूर** (है बस इसी तरह मोमिन के दिल में अल्लाह तआला जब हिदायत का नूर डालता है तो दिन पर दिन वो हक़ कुबूल करने के लिए खुलता जाता है और हर वक़्त हुक्मों पर अमल करने के लिए तैयार रहता) **है,** (और) **अल्लाह तआला अपने** (इस हिदायत के) **नूर तक जिस को चाहता है रास्ता दिखा देता** (और पहुंचा देता) **है, और अल्लाह तआला लोगों** (की हिदायत) **के लिए** (ये) **मिसालें बयान करता है** (ताकि बातें समझनी आसान हो जाएं), **और अल्लाह तआला हर चीज़ को ख़ूब जानने वाला है**(35) (आगे हिदायत वालों का हाल बयान करते हैं कि) **वो ऐसे घरों में** (जाकर इबादत करते) **हैं जिन के बारे में अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है कि उन का अदब किया जाए और उनमें अल्लाह का**

नाम लिया जाए (मुराद उन घरों से मस्जिदे हैं) **उन** (मस्जिदों) **में ऐसे लोग सुबह व शाम अल्लाह की तस्बीह** (नमाज़ों में) **करते हैं(36) जिन को अल्लाह की याद** (यानी हुक्म की पाबन्दी) **से** (जिस वक़्त के बारे में जो हुक्म हो) **और** (ख़ास कर) **नमाज़ पढ़ने से और ज़कात देने से** (कि ये हुक्म सब से ख़ास हैं) **न ख़रीदना भूल में डालने पाता है और न बेंचना** (और ताबेदारी व इबादत के बावजूद उनके डरने का यह हाल है कि) **वो ऐसे दिन** (की पकड़) **से डरते रहते हैं जिसमें बहुत से दिल और आंखें उलट जाएंगी** (यानी क़ियामत की पकड़ से डरते रहते हैं)(37) **अन्जाम** (उन लोगों का) **यह होगा कि अल्लाह तआ़ला उन को उन के** (नेक) **कामों का बहुत ही अच्छा बदला** (यानी जन्नत) **देंगे और उन को अपनी महरबानी से और भी ज़्यादा देंगे, और अल्लाह तआ़ला जिस को चाहे बेहिसाब** (यानी बहुत ज़्यादा) **दे देते हैं** (बस उन लोगों को जन्नत में इसी तरह बेहिसाब देंगे(38) **और** (दूसरी तरफ़) **जो लोग काफ़िर** (और गुमराह और हिदायत के नूर से दूर) **हैं उन** (में जो आख़रत और क़ियामत को मानते हैं उन) **के काम ऐसे हैं जैसे एक साफ़ मैदान में चमकता हुआ रेत कि प्यासा** (आदमी) **उस को** (दूर से) **पानी समझता** (है और उसकी तरफ़ दौड़ता) **है, यहां तक कि जब उस के पास आया तो उस को** (जो समझ रक्खा था) **कुछ भी न पाया और** (प्यास से तड़प-तड़प कर मर गया तो यह कहना चाहिए कि पानी की जगह) **अल्लाह के हुक्म यानी मौत को पाया सो अल्लाह तआ़ला ने उस** (की उम्र) **का हिसाब उस को बराबर चुका** (दिया यानी उम्र का ख़ातमा कर) **दिया, और अल्लाह तआ़ला** (जिस चीज़ का वक़्त आ जाता है उस का) **दम भर में हिसाब कर देता है** (उस को कुछ देर नहीं लगती और मतलब यह कि जैसे प्यासा रेत को पानी समझ लेता है ऐसे ही काफ़िर अपने भले कामों को ख़ुदा के यहां क़ुबूल और आख़रत के नफ़े वाले समझ लेता है और वहां जाकर असलीयत का पता चलेगा)(39) **या वो** (काफ़िर जो आख़रत और क़ियामत पर यक़ीन नहीं रखते उन के काम) **ऐसे हैं जैसे किसी गहरे समन्दर के अन्धेरे में हों कि उस** (समन्दर की असली परत) **को एक बड़ी लहर ने ढांक लिया हो** (फिर) **उस** (लहर) **के ऊपर दूसरी लहर** (हो फिर) **उस के ऊपर बादल** (हो जिससे सितारे की रौशनी भी न पहुंचती हो, यानी) **ऊपर नीचे बहुत से अन्धेरे** (ही अन्धेरे) **हैं, कि अगर** (ऐसी हालत में) **कोई** (आदमी दरिया की तह में) **अपना हाथ बाहर निकाले** (और उस को देखना चाहे) **तो देख नहीं सकता** (बस जो काफ़िर क़ियामत और आख़रत का इनकार करते हैं उन के पास कोई नूर नहीं), **और** (आगे उन काफ़िरों के अन्धेरे में होने की वजह यह बयान की है कि) **जिस को अल्लाह ही** (हिदायत का) **नूर न दे उस को** (कहीं से भी) **नूर नहीं** (मिल सकता)(40)

नोटः- एक हदीस में है कि "जो आदमी अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत रखना चाहता है उस को चाहिए कि मुझ से मुहब्बत करे और जो मुझ से मुहब्बत रखना चाहता है उस को चाहिए कि मेरे सहाबा से मुहब्बत करे और जो सहाबा से मुहब्बत रखना चाहता है उस को चाहिए कि क़ुरआन से मुहब्बत करे और जो क़ुरआन से मुहब्बत रखना चाहता है उस को चाहिए कि मस्जिदों से मुहब्बत करे क्योंकि वो अल्लाह के घर हैं अल्लाह ने उनकी इ़ज़्ज़त करने का हुक्म दिया है और उनमें बरकत रक्खी है वो भी बरकत वाली हैं और उनके रहने वाले भी बरकत वाले वो भी अल्लाह की हिफ़ाज़त में हैं और उनके रहने वाले भी हिफ़ाज़त में हैं वो लोग अपनी नमाज़ों में लगे होते हैं अल्लाह तआ़ला उन के काम बनाते हैं और ज़रूरतें पूरी करते हैं वो मस्जिदों में होते हैं तो अल्लाह तआ़ला उनके पीछे उन की चीज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं"। (क़ुरतबी)

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ الطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ؕ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَ تَسْبِيْحَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ
عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٤١﴾ وَ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ اِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿٤٢﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ
يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَ يُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ
بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ وَ يَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ؕ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ﴿٤٣﴾ يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ
وَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِى الْاَبْصَارِ ﴿٤٤﴾ وَ اللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى
بَطْنِهٖ ۚ وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰٓى اَرْبَعٍ ؕ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٥﴾

आयत नं० 41 से 45

क्या तुम को पता नहीं चला कि अल्लाह की तस्बीह करते हैं सब जो कुछ आसमानों और ज़मीन में (मख़लूक़) **हैं और** (ख़ास कर) **परिन्दे** (भी) **जो पर फैलाए हुए** (उड़ते फिरते हैं और यह पैदा करने वाले की एक अजीब निशानी है कि हवा में रूके हुए) **हैं,** (और) **सब** (परिन्दों) **को अपनी-अपनी दुआ और अपनी तस्बीह** (का तरीक़ा) **मालूम है, और** (इन सबूतों के बावजूद फिर भी कुछ लोग तौहीद को नहीं मानते तो) **अल्लाह तआ़ला को उनके सब कामों की पूरी ख़बर है** (इस इनकार और मुंह फेरने पर उन को सज़ा देगा)(41) **और अल्लाह ही की हुकूमत है**

आसमानों और ज़मीन में (अब भी) **और** (आख़ीर में) **अल्लाह ही की तरफ़** (सब को) **लौट कर जाना है(42) क्या तुम को यह बात मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला** (एक) **बादल को** (दूसरे बादल की तरफ़) **चलता करता है** (और) **फिर उन बादलों को आपस में मिला देता है फिर उस को तह ब तह कर**(घटा बना दे)**ता है फिर तुम बारिश को देखते हो कि उस** (बादल) **के बीच में से निकल** (निकल कर) **आती है और** (कभी-कभी) **उस बादल से यानी उस के बड़े हिस्सों से ओले बरसाता है फिर उन को जिस** (की जान पर या माल) **पर चाहता है गिराता है** (कि उस का नुक़सान हो जाता है) **और जिससे चाहता है उस को हटा देता** (है और उस के जान व माल को बचा लेता) **है,** (और) **उस बादल** (में से बिजली भी पैदा होती है और ऐसी चमकदार कि उस बादल) **की बिजली की चमक की यह हालत है कि ऐसा लगता है कि जैसे उसने अब आंखों की रौशनी को उचक लिया(43)** (और) **अल्लाह तआ़ला रात और दिन को बदलता रहता है, बेशक इन** (बातों) **में समझदारों के लिए नसीहत का सामान है(44) और अल्लाह ने हर चलने वाले जानदार को** (चाहे दरियाई हो या ज़मीनी) **पानी से पैदा किया है, फिर उन** (जानदारों) **में कुछ तो वो** (जानवर) **हैं जो अपने पेट के बल चलते हैं** (जैसे सांप, मच्छली) **और कुछ उनमें वो हैं जो दो पैरों पर चलते हैं** (जैसे इन्सान और परिन्दे जब कि हवा में न हों) **और कुछ उन में वो हैं जो चार** (पैरों) **पर** (चलते हैं जैसे गाय, बकरी इसी तरह कुछ ज़्यादा पर भी) **चलते हैं,** (असल यह है कि) **अल्लाह तआ़ला जो चाहता है बनाता है, बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है(45)**

لَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٦﴾ وَ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَ بِالرَّسُوْلِ وَ
اَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَ مَاۤ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَ اِذَا دُعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ
لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَ اِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ يَاْتُوْۤا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ﴿٤٩﴾ ؕ اَفِيْ قُلُوْبِهِمْ
مَّرَضٌ اَمِ ارْتَابُوْۤا اَمْ يَخَافُوْنَ اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَ رَسُوْلُهٗ ؕ بَلْ اُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٥٠﴾ ع اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ
الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥١﴾
وَ مَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ يَخْشَ اللّٰهَ وَ يَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ
اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ؕ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٣﴾ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا

الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ۖ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ۖ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا
الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٥٤﴾

आयत नं० 46 से 54

हम ने (हक़ के) **समझाने वाली आयतें** (आम लोगों की हिदायत के लिए) **उतारी हैं, और** (उन आम लोगों में से) **जिस को अल्लाह चाहता है सीधे रास्ते तक पहुंचा देता है(46) और ये** (मुनाफ़िक़) **लोग** (ज़बान से तो) **कहते हैं कि हम अल्लाह पर और रसूल पर ईमान ले आए और** (अल्लाह और रसूल का) **हुक्म** (दिल से) **माना फिर उस के बाद** (जब अमल करने का वक़्त आया तो) **उन में एक गिरोह** (जो बहुत ज़्यादा शरीर है अल्लाह और रसूल के हुक्म से) **मुंह मोड़ लेता है** (मतलब यह कि अगर उनके ज़िम्मे किसी का हक़ चाहता हो और वो फ़ैसले के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास चलने को कहे तो उस वक़्त में आना कानी करते हैं क्योंकि जानते हैं कि फ़ैसला तो हक़ के साथ होगा), **और ये लोग** (असल में) **ईमान नहीं रखते(47) ये लोग जब अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ इसलिए बुलाए जाते हैं कि रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **उन के** (और उनके मुख़ालिफ़ के) **बीच में फ़ैसला करदें तो उन में का एक गिरोह** (वहां आने से) **मुंह मोड़ता** (है और टालता है जबकि उनके ज़िम्मे किसी का हक़ चाहता) **है(48) और अगर उन का हक़** (किसी दूसरे के ज़िम्मे) **हो तो सर झुकाए हुए** (बेझिजक आप के बुलाने पर) **आप के पास चले आते हैं** (क्योंकि तसल्ली होती है कि वहां हक़ का फैसला होगा इसमें हमारा फ़ाइदा है(49) **क्या** (इस मुंह मोड़ने की वजह यह है कि) **उन के दिलों में** (कुफ़्र की) **बीमारी है** (यानी उन को इस का यक़ीन है कि आप अल्लाह के पैग़म्बर नहीं) **या ये** (पैग़म्बर की तरफ़ से) **शक में पड़े हैं** (कि पैग़म्बर न होने का यक़ीन तो नहीं मगर पैग़म्बर होने का भी यक़ीन नहीं) **या उन को यह डर है कि अल्लाह और उस का रसूल उन पर ज़ुल्म करने लगें** (यानी फ़ैसला इन्साफ़ से न हो, सो असलीयत यह है कि इनमें से कोई भी वजह) **नहीं** (है), **बल्कि** (असली वजह यह है कि) **ये लोग** (इन मुक़द्दमों में) **ज़ुल्म** (और ना इन्साफ़ी) **पर** (होते) **हैं** (इसलिए पैग़म्बर के सामने मुक़दमा लाना पसन्द नहीं करते कि हम हार जाएंगे)**(50) मुसलमानो की** (शान और उन की) **बात तो यह होती है जब उन को** (किसी मुक़दमे में) **फ़ैसले के लिए अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ बुलाया जाता है वो** (ख़ुशी-ख़ुशी) **कह देते हैं कि हम ने** (तुम्हारी बात को) **सुन लिया और** (उस को) **मान लिया, और** (ऐसे लोग दुनिया में भी ईमान में सच्चे हैं और) **ऐसे** (ही) **लोग** (आख़रत में

भी) **कामयाब होंगे(51) और** (हमारे यहां का क़ानून यह है कि) **जो आदमी अल्लाह और उसके रसूल का कहना माने और अल्लाह से डरे और उस की मुख़ालफ़त से बचे बस ऐसे लोग कामयाब होंगे(52) और** (उन मुनाफ़िक़ों की यह हालत है कि) **वो लोग बड़ा ज़ोर लगा कर अल्लाह की क़समें खाया करते हैं कि** (हम ऐसे ताबेदार हैं कि) **अगर आप उन को** (यानी हम को) **हुक्म दें** (कि घर बार सब छोड़ दो) **तो वो** (यानी हम सब कुछ छोड़ कर) **अभी निकल खड़े हों, आप** (उन से) **कह दीजिए कि बस क़समें न खाओ** (तुम्हारी) **ताबेदारी की असलीयत मालूम है,** (क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों की पूरी ख़बर रखता** (है और उसने मुझ को बता दिया) **है(53)** (और) **आप** (उन से) **कह दीजिए कि** (बातें बनाने से काम नहीं चलता काम करो यानी) **अल्लाह का कहना मानो और रसूल का कहना मानो, फिर** (रसूल के यह समझाने के बाद भी) **अगर तुम लोग** (ताबेदारी से) **मुंह मोड़ोगे तो समझ लो कि** (रसूल का कोई नुक़सान नहीं क्योंकि) **रसूल के ज़िम्मे वो ही तबलीग़** (का काम) **है जिस की उन पर ज़िम्मेदारी रक्खी गई है** (जिस को वो पूरी कर चुके) **और तुम्हारे ज़िम्मे वो** (ताबेदारी का काम) **है जिस का तुम पर बोझ रक्खा गया है** (जिस को तुम ने पूरा नहीं किया बस तुम्हारा ही नुक़सान होगा), **और अगर** (मुंह न फेरा बल्कि) **तुम ने उन की ताबेदारी की** (जो अल्लाह की ही ताबेदारी है) **तो सीधा रास्ता पा जाओगे, और रसूल के ज़िम्मे तो सिर्फ़ साफ़-साफ़ पहुंचा देना है** (आगे तुम से पूछ ताछ होगी कि माना या नहीं)(54)

नोटः- बशर नाम का एक मुनाफ़िक़ यानी दिखावे का मुसलमान था उसके और यहूदी के बीच में कोई ज़मीन का झगड़ा था यहूदी ने उससे कहा कि चलो तुम्हारे ही रसूल से हम फ़ैसला करा लें मगर बशर मुनाफ़िक़ नाहक़ पर था यह जानता था कि हुज़ूर के यहां फ़ैसला हक़ और इन्साफ़ पर होगा इसलिए मैं हार जाऊंगा तो उसने वहां जाने से इनकार किया और काब बिन अशरफ़ यहूदी के पास मुक़द्दमा ले जाने को कहा इस पर ये आयतें उतरीं।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَ
لَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ وَ لَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِىْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِىْ
شَيْـًٔا ؕ وَ مَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُوْنَ ﴿۵۶﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۚ وَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَ لَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۵۷﴾

आयत नं० 55 से 57

(ऐ उम्मत के लोगों) **तुम में जो ईमान लाएं और नेक काम करें** (यानी शरीअत के हुक्मों पर चलें) **उन से अल्लाह तआला वादा करता है कि उन को** (इस ताबेदारी की बरकत से) **ज़मीन में हुकूमत देगा जैसा उन से पहले** (ऐसे ही) **लोगों को हुकूमत दी थी, और** (हुकूमत इसलिए दी जाएगी कि) **जिस दीन को** (अल्लाह तआला ने) **उन के लिए पसन्द किया है** (यानी इस्लाम) **उस को उन के** (आख़रत के नफ़े के) **लिए ताक़त देगा और** (उन को दुशमनों से जो ख़तरा है) **उन के इस ख़तरे के बाद उस को अमन से बदल देगा, शर्त यह है कि मेरी इबादत करते रहें** (और) **मेरे साथ किसी क़िस्म का शिर्क न करें** (न खुला न छुपा जिस को रिया यानी दिखावा कहते हैं यानी अल्लाह का यह वादा दीन की पाबन्दी की शर्त के साथ है और आख़रत की नेमतों का वादा इस के सिवा है)**, और जो आदमी इस** (वादे) **के** (ऐलान के) **बाद भी नाशुक्री करेगा** (यानी दीन के ख़िलाफ़ चलेगा) **तो** (ऐसे आदमी के लिए यह वादा नहीं क्योंकि) **ये लोग नाफ़रमान** (और बाग़ी हैं और वादे ताबेदारों के लिए) **हैं(55) और** (ऐ मुसलमानो जब ईमान और नेक कामों के दीन दुनिया के फ़ाइदे सुन लिए तो तुम को चाहिए कि ख़ूब) **नमाज़ की पाबन्दी रक्खो और ज़कात दिया करो और** (बाक़ी हुक्मों में भी) **रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **का कहना मानो ताकि तुम पर** (पूरा) **रहम किया जाए(56)** (आगे कुफ़्र व गुनाह का अन्जाम बताया गया है कि) **काफ़िरों के बारे में यह मत सोचना कि ज़मीन** (के किसी हिस्से) **में** (भाग जाएंगे और हम को) **हरा देंगे** (और हमारे अज़ाब से बच जाएंगे, नहीं बल्कि वो ख़ुद हारेंगे और सज़ा पाएंगे यह नतीजा तो दुनिया में है) **और** (आख़रत में) **उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और वो बहुत ही बुरा ठिकाना है**(57)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ وَ الَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ؕ مِنْ
قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَ حِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ وَ مِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَآءِ ۫ؕ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ؕ لَيْسَ
عَلَيْكُمْ وَ لَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ بَعْدَهُنَّ ؕ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَ
اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٥٨ وَ اِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَاْذِنُوْا كَمَا اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذٰلِكَ
يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٥٩ وَ الْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ
جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍۭ بِزِيْنَةٍ ؕ وَ اَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ؕ وَ اللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝٦٠

आयत नं० 58 से 60

ऐ ईमान वालो (तुम्हारे पास आने के लिए) **तुम्हारे ग़ुलाम बान्दियों को और तुम में से जो** (बच्चे) **अभी बालिग़ नहीं हुए उन को तीन वक़्तों में इजाज़त लेना चाहिए,** (एक तो) **सुबह की नमाज़ से पहले और** (दूसरे) **जब दोपहर को** (सोने लेटने के लिए) **अपने** (ऊपरी) **कपड़े उतार दिया करते हो और** (तीसरे) **इशा की नमाज़ के बाद, ये तीन वक़्त तुम्हारे पर्दे के हैं** (यानी ये आराम के वक़्त हैं जिसमें आदमी बेफ़िक्री से रहना चाहता है जिस में कभी-कभी अकेले में पर्दे का बदन भी खुल जाता है इसलिए इन लोगों को समझाओ कि बिना ख़बर किये और बिना इजाज़त लिये हुए इन वक़्तों में तुम्हारे पास न आया करें), **इन वक़्तों के सिवा न** (बिना इजाज़त आने देने और मना न करने में) **तुम पर कोई इल्ज़ाम है और न** (बिना इजाज़त चले आने में) **उन पर कुछ इल्ज़ाम है,** (क्योंकि) **वो अक्सर तुम्हारे पास आते जाते रहते हैं कोई किसी के पास और कोई किसी के पास** (बस हर वक़्त इजाज़त लेने में तकलीफ़ है), **इसी तरह अल्लाह तआला तुम से** (अपने) **हुक्म साफ़-साफ़ बयान करते हैं, और अल्लाह तआला जानने वाले हिकमत वाले हैं(58) और जब** (ये) **तुम्हारे बच्चे बालिग़ हो जाएं तो उन को भी उसी तरह इजाज़त लेना चाहिए जैसा उन से पहले** (यानी उन से बड़ी उम्र के) **लोग इजाज़त लेते हैं, इसी तरह अल्लाह तआला तुम से अपने हुक्म साफ़-साफ़ बयान करते हैं, और अल्लाह तआला जानने वाले हिकमत वाले हैं(59) और** (एक बात यह जानना चाहिए कि पर्दे के हुक्म बुराई की रोकथाम के लिए हैं जहां इसका ख़तरा न हो जैसे) **बड़ी बूढ़ी औरतें जिन को** (किसी के) **निकाह** (में आने) **की उम्मीद न रही हो** (यानी उन की तरफ़ किसी की दिलचस्पी न रहे) **उन को इस बात में कोई गुनाह नहीं कि वो अपने** (ऊपरी) **कपड़े** (जैसे नक़ाब ग़ैर महरम के सामने भी) **उतार कर रख दें शर्त यह है कि सिंगार न दिखाएं, और** (बूढ़ी औरतों को ग़ैर महरमों के सामने चेहरा खोलने की इजाज़त है लेकिन) **इससे भी बचें तो उनके लिए और ज़्यादा बेहतर है, और अल्लाह तआला सब कुछ सुनते सब कुछ जानते हैं(60)**

नोटः- क़ुरआन ने पाकीज़ा समाज की तालीम दी है जिसमें किसी को किसी से कोई तकलीफ़ न हो सब आराम से रहें।

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمٰى حَرَجٌ وَّ لَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَّ لَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ وَّ لَا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَنْ تَاْكُلُوْا مِنْۢ
بُيُوْتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اٰبَآئِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اِخْوَانِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ

بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗۤ اَوْ صَدِيْقِكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ
جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا ؕ فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً
طَيِّبَةً ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٦١﴾ ع

आयत नं० 61

(अगर तुम अन्धे, लंगड़े या बीमार को अपने किसी रिशतेदार या मिलने वाले के घर ले जा कर कुछ खिला पिलादो या ख़ुद खा पीलो तो जब यह यक़ीन के साथ पता हो कि वो रिशतेदार या मिलने वाला हमारे खाने और खिलाने पर राज़ी होगा उस को कोई तकलीफ़ न होगी तो इन सूरतों में) **न तो अन्धे आदमी के लिए कोई हरज है और न लंगड़े आदमी के लिए और न बीमार आदमी के लिए कुछ हरज है और न ख़ुद तुम्हारे लिए इस बात में** (कुछ हरज है) **कि तुम** (चाहे ख़ुद या उन अपाहजों के साथ) **अपने** (सब) **घरों से** (जिन में बीवी औलाद के घर भी आ गये) **खाना खालो या** (उन घरों में खालो जिन का ज़िक्र आगे आता है, यानी न तुम को ख़ुद खाने में गुनाह है और न उन अपाहजों को खिलाने में और उन अपाहजों को भी खाने में कोई गुनाह नहीं और वो घर ये हैं जैसे) **अपने बाप के घर से** (खालो खिला दो) **या अपनी मांओं के घर से या अपने भाइयों के घरों से या अपनी बहनों के घरों से या अपने चचाओं के घरों से या अपनी फूपियों के घरों से या अपने मामू के घरों से या अपनी ख़ालाओं के घरों से या उन घरों से जिन की चाबियां तुम्हारे हाथ में हैं** (यानी ख़र्च करने का हक़ दे दिया गया है) **या अपने दोस्तों के घरों से,** (फिर उस में भी कुछ हरज नहीं) **कि सब मिलकर खाओ या अलग-अलग, फिर** (यह भी जान लो कि) **जब तुम घरों में जाने लगो तो अपने लोगों को** (यानी वहां जो मुसलमान हों उन को) **सलाम कर लिया करो** (जो कि) **बरकत वाली पाकीज़ा दुआ है जो अल्लाह की तरफ़ से आई है, इसी तरह अल्लाह तआ़ला तुम से** (अपने) **हुक्म बयान करता है ताकि तुम समझो** (और अमल करो)**(61)**

नोटः- अपाहज लोगों को दूसरों के साथ खाने में झिजक होती थी कि हमारी वजह से उनको तकलीफ़ न हो ऐसे ही आम लोग सोचते थे कि शायद ये हमारे साथ बेफ़िक्री से न खा पाएं ऐसे ही दूसरे रिशतेदारों और दोस्तों के घर खाने या खिलाने में झिजक होती थी इस पर ये आयतें उतरीं और इन बातों की इजाज़त देकर बता दिया गया कि इतनी बारीकी में जाने की ज़रूरत नहीं है।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ
يَسْتَأْذِنُوهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ
شَأْنِهِمْ فَأْذَن لِّمَن شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٢﴾ لَّا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ
بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُم بَعْضًا ۚ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ مِنكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ
أَمْرِهِ أَن تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قَدْ يَعْلَمُ مَا
أَنتُمْ عَلَيْهِ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٤﴾

आयत नं० 62 से 64

बस मुसलमान तो वो ही हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं और जब रसूल के पास किसी ऐसे काम पर जमा होते हैं जिसके लिए इकट्ठा किया गया है (और अगर वहां से कहीं जाने की ज़रूरत पड़ती है) **तो जब तक आप से इजाज़त न लें** (और आप इस पर इजाज़त न देदें मजलिस से उठकर) **नहीं जाते,** (ऐ पैग़म्बर) **जो लोग आप से** (ऐसे मौक़ों पर) **इजाज़त लेते हैं बस वो ही अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं** (आगे ऐसे लोगों को इजाज़त देने का बयान है) **तो जब ये** (ईमान वाले) **लोग** (ऐसे मौक़ों पर) **अपने किसी काम के लिए आप से** (जाने की) **इजाज़त मांगे तो आप जिस के लिए** (सही समझें और इजाज़त देना) **चाहें इजाज़त दे दिया करें** (और जिस को ठीक न समझें इजाज़त न दें क्योंकि हो सकता है वो जिस काम को ज़रूरी समझ कर इजाज़त चाहते हों वो इतना ज़रूरी न हो) **और** (इजाज़त देकर भी) **आप उनके लिए अल्लाह तआ़ला से बख़्शिश की दुआ किया कीजिए** (क्योंकि उन का यह छुट्टी चाहना भले ही मजबूरी से है मगर फिर भी दुनिया के लिए है)**, बेशक अल्लाह तआ़ला बख़्शने वाला महरबान है** (क्योंकि उनकी नीयत अच्छी थी इसलिए ऐसी बातों पर पकड़ नहीं करता)(62) **तुम लोग रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **के बुलाने को** (जब कि वो किसी इस्लामी ज़रूरत के लिए तुम को इकट्ठा करें) **ऐसा** (मामूली बुलाना) **मत समझो जैसा तुम में एक दूसरे को बुला लेता है** (कि चाहे आया या न आया, फिर आकर भी जब तक चाहा बैठा जब चाहा बेइजाज़त उठ कर चल दिया रसूल का बुलाना ऐसा नहीं बल्कि उनके इस हुक्म को मानना वाजिब है और बेइजाज़त वापस जाना हराम है और उस का जाना हो सकता है हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से छुपा रह जाए लेकिन यह याद रक्खो कि) **अल्लाह तआ़ला उन लोगों को** (अच्छी तरह) **जानता है जो** (दूसरों की)

आड़ में होकर तुम में से (नबी की मजलिस से) **खिसक जाते हैं तो जो लोग अल्लाह के हुक्म की** (जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वास्ते से पहुंचा है) **मुख़ालफ़त करते हैं उन को इससे डरना चाहिए कि उन पर** (दुनिया में) **कोई आफ़त आजाए या उन पर** (आख़रत में) **कोई** (अज़ाब हो और यह भी हो सकता है कि दुनिया व आख़रत दोनों में) **अज़ाब हो**(63) (और यह भी) **याद रक्खो कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है, अल्लाह तआ़ला उस हालत को भी जानता है जिस पर तुम** (अब) **हो, और उस दिन को भी जिसमें सब उस के पास** (दोबारा ज़िन्दा करके) **लाए जाएंगे तो वो उन को सब जितला देगा जो कुछ उन्होंने किया था, और** (यह बात ही कुछ ख़ास नहीं) **अल्लाह तआ़ला** (तो) **सब कुछ जानता है**(64)

नोटः- (1) ये आयतें जंगे अहज़ाब के मौक़े पर उतरीं जब कि मुसलमानो को मशवरे के लिए बुलाया गया और कुछ मुनाफ़िक़ चुपके से खिसक गये और कुछ लोग बहाना बनाकर चले गये मगर सच्चे मुसलमान बिना किसी सख़्त मजबूरी के और वो भी बिना इजाज़त नहीं गये।

(2) एक बात यहां यह भी मालूम हुई कि अपने बुज़ुर्गों और बड़ों को उन का नाम लेकर पुकारना और बुलाना बेअदबी है। इज़्ज़त के साथ बात करना चाहिए।

25-सूरत-फ़ुरक़ान

इस मक्की सूरत में '6' रूकू और '77' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

تَبٰرَكَ الَّذِیْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰی عَبْدِهٖ لِیَكُوْنَ لِلْعٰلَمِیْنَ نَذِیْرَا ۙ﴿۱﴾ الَّذِیْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ لَمْ
یَتَّخِذْ وَلَدًا وَّ لَمْ یَكُنْ لَّهٗ شَرِیْكٌ فِی الْمُلْكِ وَ خَلَقَ كُلَّ شَیْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِیْرًا ﴿۲﴾ وَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً
لَّا یَخْلُقُوْنَ شَیْـًٔا وَّ هُمْ یُخْلَقُوْنَ وَ لَا یَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّ لَا نَفْعًا وَّ لَا یَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّ لَا حَیٰوةً وَّ لَا
نُشُوْرًا ﴿۳﴾

आयत नं० 01 से 03

बड़ी ऊंची शान है उस ज़ात की जिसने यह फ़ैसले की किताब (यानी कुरआन) **अपने ख़ास बन्दे** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **पर उतारी ताकि वो सारी दुनिया जहान वालों के लिए** (ईमान न लाने की सूरत में अल्लाह के अज़ाब से) **डराने वाला हो(01) ऐसी ज़ात जिसकी आसमानों और ज़मीन पर हुकूमत है और उसने किसी को** (अपनी) **औलाद नहीं बनाया और न कोई हुकूमत में उस का साझी है और उसने हर चीज़ को पैदा किया फिर सब का अलग-अलग अन्दाज़ रक्खा** (कि किसी चीज़ की ख़ूबियां और आसार कुछ हैं किसी के कुछ हैं)(02) **और** (इन मुशरिक) **लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर ऐसे माबूद बना लिये हैं जो** (किसी तरह माबूद होने के क़ाबिल नहीं क्योंकि वो) **किसी चीज़ को पैदा करने वाले नहीं बल्कि वो ख़ुद पैदा किये गये हैं और जिन का ख़ुद अपने नुक़सान** (के दूर करने) **या फ़ाइदा** (उठा लेने) **पर भी कोई बस नहीं चलता और न किसी की मौत उनके बस में है** (कि किसी जानदार की जान निकाल सकें) **और न किसी की ज़िन्दगी** (उनके बस में है कि किसी में जान डाल दें) **और न किसी को** (क़ियामत में) **दोबारा ज़िन्दा करना** (उन के बस में है और जो आदमी इन चीज़ों पर कुदरत नहीं रखता वो माबूद नहीं हो सकता)(03)

नोटः- ऊपर आयत से साबित हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैग़म्बरी सारी दुनिया

के लिए है पहले पैग़म्बरों की तरह नहीं कि उन की पैग़म्बरी किसी ख़ास क़ौम या किसी ख़ास जगह के लिए होती थी।

وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اِفْكُ اِۨفْتَرٰىهُ وَ اَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۛۚ فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّ زُوْرًا ۚ﴿۴﴾ وَ
قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا ﴿۵﴾ قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِي
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۶﴾ وَ قَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَ يَمْشِيْ فِي
الْاَسْوَاقِ ؕ لَوْ لَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ۙ﴿۷﴾ اَوْ يُلْقٰٓى اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ
مِنْهَا ؕ وَ قَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿۸﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا
يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿۹﴾

आयत नं० 04 से 09

और काफ़िर लोग (कुरआन के बारे में) **यह कहते हैं कि यह** (कुरआन) **तो कुछ भी नहीं बस झूट** (ही झूट) **है जिस को इस आदमी** (यानी पैग़म्बर) **ने घड़ लिया है और दूसरे लोगों ने इस** (काम) **में इस की मदद की है** (मुराद वो किताब वाले हैं जो मुसलमान हो गये थे या आप के पास वैसे ही आया करते थे) **तो** (ऐसी बात कहकर) **यह लोग बड़े ज़ुल्म और झूट पर उतर आए(04) और ये** (काफ़िर) **लोग** (अपने इसी ऐतराज़ की हिमायत में) **यह कहते हैं कि यह** (कुरआन) **पहले लोगों की कही हुई बेसनद बातें हैं जिन को इस आदमी** (यानी पैग़म्बर) **ने** (सोच-सोच कर अच्छे अन्दाज़ में अपने सहाबा के हाथ से) **लिखवा लिया है** (ताकि हिफ़ाज़त रहे) **फिर वो ही** (बातें) **उस को सुबह शाम पढ़ कर सुनाई जाती** (हैं ताकि याद रहें फिर वो ही याद की हुई बातें मजमे में बयान करके ख़ुदा की तरफ़ से उतरी हुई बता दी जाती) **हैं(05) आप** (इस के जवाब में) **कह दीजिए कि इस** (कुरआन) **को तो उस** (पाक) **ज़ात ने उतारा है जिस को सब छुपी बातों की ख़बर है चाहे वो आसमानों में हों या ज़मीन में हों** (मतलब यह कि अगर कुरआन घड़ी हुई कहानियां होतीं या किसी दूसरे की मदद से लिखी हुई किताब होता तो सारी दुनिया इसकी मिसाल लाने से मजबूर क्यों होती), **सचमुच अल्लाह तआला बख़्शने वाला महरबान है** (इसलिए ऐसे झूट और ज़ुल्म पर फ़ौरन सज़ा नहीं देता)(06) **और ये** (काफ़िर) **लोग** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में) **यह कहते हैं कि इस रसूल को क्या हुआ कि वो** (हमारी तरह) **खाना** (भी) **खाता है और** (ज़रूरतों के लिए हमारी ही तरह) **बाज़ारों में चलता फिरता है**

(मतलब यह है पैग़म्बर इन्सान के बजाए फ़रिशता होना चाहिए जिसे खाने पीने की चीज़ों की ज़रूरत न हो, और कम से कम इतना तो ज़रूर ही होना चाहिए कि रसूल का साथी व मददगार कोई फ़रिशता हो इसलिए कहा कि) **इस** (रसूल) **के पास कोई फ़रिशता क्यों नहीं भेजा गया कि वो उस के साथ रह कर** (लोगों को अल्लाह के अज़ाब से) **डराता(07) या** (अगर यह भी न होता तो कम से कम रसूल को अपने खाने पीने की ज़रूरतों से तो बेफ़िक्री होती इस तरह कि) **उस के पास** (ग़ैब से) **कोई ख़ज़ाना आजाता या उसके पास कोई बाग़ होता जिससे यह खाया** (पिया) **करता, और** (मुसलमानों से) **ये ज़ालिम यह** (भी) **कहते हैं कि** (जब इन के पास न कोई फ़रिशता न ख़ज़ाना न बाग़ और फिर भी ये पैग़म्बरी का दावा करते हैं तो मालूम होता है कि उन की अक़्ल में ख़राबी है इसलिए) **तुम लोग एक ऐसे आदमी की राह पर चल रहे हो जिस पर जादू हो गया है(08)** (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **देखिये तो ये लोग आप के लिए कैसी अजीब-अजीब बातें बयान कर रहे हैं तो** (इन बेहूदा बातों से) **वो** (बिल्कुल) **गुमराह हो गये फिर वो राह नहीं पा सकते(09)**

تَبٰرَكَ الَّذِیْٓ اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَیْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَ یَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا ﴿١٠﴾ بَلْ
كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ ۫ وَ اَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِیْرًا ﴿١١﴾ۚ اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍۭ بَعِیْدٍ سَمِعُوْا لَهَا
تَغَیُّظًا وَّ زَفِیْرًا ﴿١٢﴾ وَ اِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَیِّقًا مُّقَرَّنِیْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ﴿١٣﴾ؕ لَا تَدْعُوا الْیَوْمَ ثُبُوْرًا
وَّاحِدًا وَّ ادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِیْرًا ﴿١٤﴾ قُلْ اَذٰلِكَ خَیْرٌ اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِیْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ كَانَتْ لَهُمْ جَزَآءً وَّ
مَصِیْرًا ﴿١٥﴾ لَهُمْ فِیْهَا مَا یَشَآءُوْنَ خٰلِدِیْنَ ؕ كَانَ عَلٰی رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْـُٔوْلًا ﴿١٦﴾ وَ یَوْمَ یَحْشُرُهُمْ وَ مَا یَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَیَقُوْلُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِیْ هٰۤؤُلَآءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِیْلَ ﴿١٧﴾ؕ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ
یَنْۢبَغِیْ لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِیَآءَ وَ لٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَ اٰبَآءَهُمْ حَتّٰی نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَ كَانُوْا قَوْمًۢا
بُوْرًا ﴿١٨﴾ فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا تَسْتَطِیْعُوْنَ صَرْفًا وَّ لَا نَصْرًا ۚ وَ مَنْ یَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ
عَذَابًا كَبِیْرًا ﴿١٩﴾ وَ مَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِیْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَیَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَ یَمْشُوْنَ فِی الْاَسْوَاقِ ؕ وَ
جَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ؕ اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَ كَانَ رَبُّكَ بَصِیْرًا ﴿٢٠﴾ؒ

आयत नं० 10 से 20

वो ज़ात बड़ी आलीशान है कि अगर वो चाहे तो आप को (काफ़िरों की) **इस** (मांग) **से** (भी) **अच्छी चीज़ देदे यानी बहुत से** (ग़ैबी) **बाग़ जिन के नीचे से नहरें बहती हों और** (बल्कि इन बाग़ों के साथ और चीज़ें जैसे) **आप को बहुत से महल** (देदे जो उन बाग़ों में बने हों या बाहर ही हों, मतलब यह कि जो जन्नत में मिलेगा अगर अल्लाह चाहे तो आप को दुनिया ही में) **देदे**(10) (और इन ऐतराज़ों की वजह यह है कि) **ये लोग क़ियामत को झूट समझ रहे हैं** (इसलिए अन्जाम की फ़िक्र नहीं है और जो जी में आता है बक देते हैं) **और** (अन्जाम इस का यह होगा कि) **हम ने ऐसे आदमी** (की सज़ा) **के लिए जो कि क़ियामत को झूटा समझे दोज़ख़ तैयार कर रक्खी** (है क्योंकि क़ियामत को झुटलाना अल्लाह व रसूल को झुटलाना है जो असली वजह दोज़ख़ में जाने की) **है**(11) (और उस दोज़ख़ की यह हालत होगी कि) **जब वो** (दोज़ख़) **उन को दूर से देखेगी तो** (देखते ही गुस्से में इतना जोश मारेगी कि) **वो लोग** (दूर ही से) **उस की आवाज़ सुनेंग**(12) **और** (फिर) **जब वो उस** (दोज़ख़) **की किसी तंग जगह में हाथ पांव जकड़ कर डाल दिये जाएंगे तो वहां मौत ही मौत पुकारेंगे**(13) (उस वक़्त उन से कहा जाएगा कि) **एक बार मौत को न पुकारो बल्कि बार-बार मौत को पुकारते रहो** (क्योंकि यह मुसीबत कभी ख़त्म होने वाली नहीं है)(14) **आप** (उन को यह मुसीबत सुना कर) **कहिए कि** (यह बताओ कि) **क्या यह** (मुसीबत की) **हालत अच्छी है** (जो कुफ़्र की वजह से है) **या वो सदा रहने की जन्नत** (अच्छी है) **जिस का अल्लाह से डरने वालों से** (यानी ईमान वालों से) **वादा किया गया है, कि वो उनके लिए** (उनकी ताबेदारी का) **बदला है और उनका** (आख़री) **ठिकाना**(15) (और) **उन को वहां सब चीज़ें मिलेंगी जो कुछ वहां चाहेंगे** (और) **वो** (उसमें) **सदा रहेंगे,** (ऐ पैग़म्बर) **यह एक वादा है जो आप के रब ने** (महरबानी से अपने) **ज़िम्मे कर लिया है** (और) **मांगने के क़ाबिल है**(16) **और** (वो दिन उन को याद दिलाइये कि) **जिस दिन अल्लाह तआ़ला उन** (काफ़िर) **लोगों को और जिन को वो लोग अल्लाह के सिवा पूजते थे** (और जिन्होंने किसी को गुमराह नहीं किया था चाहे सिर्फ़ बुत हों या फ़रिशते) **उन** (सब) **को जमा करेगा फिर** (उन माबूदों से इन पूजने वालों की रूसवाई के लिए) **कहेगा क्या तुम ने मेरे इन बन्दों को** (हक़ की राह से) **गुमराह किया था या ये** (अपने आप ही हक़ की) **राह से गुमराह हो गये थे** (मतलब यह कि उन्होंने तुम्हारी इबादत जो असल में गुमराही है तुम्हारे कहने और ख़ुशी से की थी या अपनी ग़लत राय से घड़ ली थी कि हमारी इबादत से ख़ुश होकर अल्लाह तआ़ला से सिफ़ारिश करेंगे)(17) **वो** (माबूद) **कहेंगे कि अल्लाह की पनाह हमारी क्या**

मजाल थी कि हम आप के सिवा और रखवाले बनाते (यानी हम शिर्क की बात कैसे बताते) **लेकिन** (ये ख़ुद ही गुमराह हुए और शुक्र के सामान को कुफ़्र का सामान बनाया जैसा) **आपने** (तो) **उन को और उनके बड़ों को** (दुनिया का ख़ूब) **साज़ो सामान दिया** (जिस का मतलब यह था कि नेमत देने वाले को पहचानते और उस का शुक्र व ताबेदारी करते मगर ये लोग) **यहां तक** (हवस व मज़ों में डूबे) **कि** (आप की) **याद** (ही) **को भुला बैठे और ये लोग ख़ुद ही बर्बाद हुए**(18) (उस वक़्त अल्लाह तआला उन पूजने वालों से कहेंगे) **लो तुम्हारे इन माबूदों ने तुम को तुम्हारी** (सब) **बातों में झूटा** (ही) **ठहरा दिया** (और उन्होंने भी तुम्हारा साथ न दिया) **सो** (अब) **तुम न तो ख़ुद** (अज़ाब को अपने ऊपर से) **हटा सकते हो और न** (किसी दूसरे की तरफ़ से) **मदद पा सकते हो** (यहां तक कि जिन पर पूरा भरोसा था वो भी साफ़ जवाब दे रहे हैं और तुम्हारी खुली मुख़ालफ़त कर रहे हैं) **और जो** (जो) **तुम में ज़ालिम** (यानी मुशरिक) **होगा हम उस को बड़ा अज़ाब चखाएंगे** (यानी ज़ुल्म और शिर्क का अन्जाम अज़ाब है)(19) **और हम ने आप से पहले जितने पैग़म्बर भेजे सब खाना भी खाते थे और बाज़ारों में भी चलते फिरते थे** (यानी ये बातें पैग़म्बरी में रूकावट नहीं), **और** (ऐ पैग़म्बर और पैग़म्बर के मानने वालो तुम काफ़िरों की ऐसी बेहूदा बातों पर ग़म न करो क्योंकि) **हम ने तुम** (लोगों) **में एक को दूसरे के लिए आज़माने का सामान बनाया है** (कि देखें ऐसी सूरत में कौन पैग़म्बर को मानता है कौन नहीं मानता) **है,** (सो जब यह बात मालूम हो गई तो) **क्या तुम** (अब भी) **सब्र करोगे** (यानी सब्र करना चाहिए) **और** (यह बात यक़ीनी है कि) **आप का रब ख़ूब देख रहा है** (तो वक़्त आने पर उन को सज़ा देगा फिर आप क्यों ग़म करें)(20)

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरे रब ने मुझ से फ़रमाया कि मैं आप के लिए पूरे मक्का की ज़मीन और उसके पहाड़ों को सोना बना देता हूं तो मैंने कहा नहीं या रब मेरे मुझे तो यह पसन्द है कि मुझे एक दिन पेट भराई खाना मिले (जिस पर अल्लाह का शुक्र अदा करूं) और एक दिन भूका रहूं (उस पर सब्र करूं) । (तिरमिज़ी)

और हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर मैं चाहता तो सोने के पहाड़ मेरे साथ फिरा करते। (मज़हरी)